■ वर्ष-22 ■ अंक-45
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00

दिल्ली (राष्ट्रीय संस्करण)

■ मंगलवार ■ 1 अप्रैल 2025

चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया
विक्रम संवत्-2082

E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

दैनिक
समय जगत

दिल्ली, भोपाल, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

एक संदेश-पूरा देश

देश की राजधानी से प्रकाशित होकर विभिन्न प्रदेशों में प्रसारित

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

शीर्ष की ओर 'समय जगत'
Facebook
asksamayjagat
Instagram
@asksamayjagat
Twitter
@asksamayjagat
यूट्यूब पर
'खबर समय जगत'
को भी सब्सक्राइब करें
www.dainiksamayjagat.in

माँ चंद्रघंटा

पिण्डजप्रवरारूढ़ा चण्डकोपास्त्रकैयुता।
प्रसादं तनुते मद्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

श्री दुर्गा का तृतीय रूप श्री चंद्रघंटा है। इनके मस्तक पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र है, इसी कारण इन्हें चंद्रघंटा देवी कहा जाता है। नवरात्रि के तृतीय दिन इनका पूजन और अर्चना किया जाता है। इनके पूजन से साधक को मणिपुर चक्र के जाग्रत होने वाली सिद्धियां स्वत : प्राप्त हो जाती हैं तथा सांसारिक कष्टोंसे मुक्ति मिलती है। इनकी आराधनासे मनुष्य के हृदय से अहंकार का नाश होता है तथा वह असीम शांति की प्राप्ति कर प्रसन्न होता है। माँ चन्द्रघण्टा मंगलदायनी है तथा भक्तों को निरोग रखकर उन्हें वैभव तथा ऐश्वर्य प्रदान करती है। उनके घंटो मे अपूर्व शीतलता का वास है।

मुख्यमंत्री आज करेंगे स्कूल चलें हम अभियान का शुभारंभ

राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी होगा आयोजित

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एक अप्रैल मंगलवार को शासकीय नवीन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय अरेरा कॉलोनी (ओल्ड कैंपियन) में प्रातः 9 बजे स्कूल चलें हम अभियान - 2025 का शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी होगा। कार्यक्रम में जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री चैतन्य कुमार काश्यप भी मौजूद रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के स्कूल चलें हम अभियान कार्यक्रम के डिजिटल प्लेटफार्म पर लाइव प्रसारण की व्यवस्था भी की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कार्यक्रम में नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करेंगे। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न खेलों के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षा पोर्टल 3.0 का शुभारंभ करेंगे। प्रदेश में करीब 92 हजार सरकारी स्कूल हैं। इनमें प्रायमरी, मीडिल, हाई और हायर सेकण्डरी स्कूल हैं। इन स्कूलों में लगभग 85 लाख बच्चे अध्ययनरत हैं। इस वर्ष एक अप्रैल से नवीन शैक्षणिक सत्र शुरू होने जा रहा है। प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2025 के माध्यम से समस्त शासकीय-अशासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश की कार्रवाही एजुकेशन पोर्टल 3.0 पर स्टूडेंड डायरेक्ट्री मैनेजमेंट सिस्टम प्रणाली पर की जा रही है। एजुकेशन पोर्टल में स्कूल शिक्षा विभाग से संबंधित सभी कार्यों को शामिल किया गया है। विभाग से संबंधित जानकारी पोर्टल के माध्यम से सुलभ तरीके से प्राप्त की जा सकेगी। प्रदेश में जिले के प्रभारी मंत्री जिला स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में एक अप्रैल को शामिल होंगे। यह कार्यक्रम चयनित शाला में होगा। कार्यक्रम में सांसद, विधायक एवं अन्य जन-प्रतिनिधि शामिल होंगे। उपस्थित छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें वितरित की जायेंगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने ऐसी व्यवस्था की है कि नये शैक्षणिक-सत्र की शुरूआत में विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें मिल जायें। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी और मैदानी अमले को विभाग द्वारा निर्देश जारी कर दिये गये हैं। ग्राम और बसाहट के शाला से बाहर रहे चिन्हित बच्चों का शाला में नामांकन कराया जायेगा। बच्चों के अभिभावकों का शाला स्तर पर स्वागत किया जायेगा। कक्षा-1 से 8 तक सभी शालाओं में एक अप्रैल को बालसभा का आयोजन किया जायेगा। इस दिन शालाओं में विशेष भोजन की व्यवस्था भी की गयी है। स्कूल शिक्षा विभाग का प्रयास है कि सरकारी स्कूलों के बच्चों को शिक्षण सत्र शुरू होते ही अप्रैल माह में निशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हो जायें। कक्षा एक से कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिये करीब 5 करोड़ 60 लाख पुस्तकें, एक करोड़ 2 लाख फाउंडेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी (एफएलएन) अभ्यास पुस्तिकाएं और करीब 26 लाख ब्रिज कोर्स की पुस्तकें निशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं। स्कूल चलें हम अभियान के दूसरे दिन दो अप्रैल को शालाओं में भविष्य से भेंट'' कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध, प्रबुद्ध और सम्मानित व्यक्तियों को प्रेरक की भूमिका में विद्यार्थियों से भेंट के लिये आमंत्रित किया जायेगा। इसी दिन स्थानीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाले खिलाड़ी, साहित्यकार, कलाकार, मीडिया, संचार मित्रों, पुलिस अधिकारी, राज्य शासन के अधिकारी को विशेष रूप से आमंत्रित किया जायेगा। आमंत्रित अतिथि उपस्थित बच्चों को पढ़ाई के महत्व और प्रेरणादायी कहानियाँ सुनायेंगे। इस दौरान सामाजिक संस्था एवं आमंत्रित व्यक्ति स्वैच्छा से विद्यार्थियों को शाला उपयोगी वस्तुएँ भेंट कर सकेंगे। जिला कलेक्टर को जिले के प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों को किसी एक शाला में जाकर एक कालखण्ड में बच्चों के साथ संवाद करने के लिये संवाद करने के भी निर्देश दिये गये हैं। स्कूल चलें हम अभियान के अंतर्गत 3 अप्रैल को शाला स्तर पर पालकों के साथ सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी। इसका उद्देश्य पालकों का विद्यालय से जुड़ाव करना है।

राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री सहित कई दिग्गजों ने देशवासियों को दी ईद की बधाई

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने एक्स पर लिखा, ईद-उल-फितर के मुबारक मौके पर सभी देशवासियों, विशेष रूप से मुस्लिम भाइयों और बहनों को बधाई। यह त्योहार भाईचारे की भावना को मजबूत बनाता है तथा करुणा-भाव और दान की प्रवृत्ति को अपनाने का संदेश देता है। मैं कामना करती हूं कि यह पर्व सभी के जीवन में शांति, समृद्धि और खुशियां लेकर आए तथा सबके दिलों में नेकी के रास्ते पर आगे बढ़ने के जज्बे को मजबूत बनाए। माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, ईद-उल-फितर की बधाई। यह त्योहार हमारे समाज में आशा, सद्भाव और दयालुता की भावना को बढ़ाए। आपके सभी प्रयासों में खुशी और सफलता मिले। ईद मुबारक ! रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, ईद-उल-फितर की हार्दिक शुभकामनाएं। यह त्योहार सभी के लिए सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए। आशा है कि यह दिन पूरे समाज में सद्भाव और भाईचारे के बंधन को और मजबूत करेगा। ईद मुबारक।

चारधाम यात्रा जाने वाले यात्रियों के चेकअप के लगाए जा रहे हेल्थ एटीएम

देहरादून। स्वास्थ्य विभाग चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्रियों की जांच के लिए 50 हेल्थ एटीएम संचालित करेगा। ये एटीएम विभाग को 2023 में सीएसआर के तहत मिले थे। अब इनका रखरखाव व संचालन विभाग कर रहा है। इसके साथ ही यात्रा मार्ग पर स्क्रीनिंग प्वाइंट बनाए जा रहे हैं, जहां यात्रियों के ब्लड प्रेशर, शुगर व आक्सीजन लेवल की जांच की जाएगी।

प्रदेश में इस साल 30 अप्रैल से चारधाम यात्रा शुरू होगी। सरकार का जोर यात्रियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने पर है। इसके लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। यात्रियों के लिए हेल्थ एडवाइजरी जारी की है तो यात्रा मार्गों पर चिकित्सकों की तैनाती की जा रही है। इसके साथ ही यात्रा मार्ग पर तकरीबन 50 हेल्थ एटीएम भी सक्रिय किए जा रह हैं। इन हेल्थ एटीएम में 70 से ज्यादा परीक्षण किए जाएंगे। इससे बेसिक कार्डियोलाजी, न्यूरोलाजी, पल्मोनरी टेस्टिंग, गायनोक्लाजी, बेसिक लैबोरेटरी टेस्टिंग करा सकते हैं। इनमें पल्स रेटिंग, बीपी, आक्सीजन, ब्लड शुगर जैसे प्राथमिक जांच शामिल हैं।

हेल्थ एटीएम से कम समय में जांच संभव है और रिपोर्ट भी कम समय में मिल जाती है। साथ ही यह ब्लड प्रेशर, शुगर, वजन, लंबाई, शरीर का तापमान, शरीर में आक्सीजन लेवल, बाडीमास इंडेक्स, मेटाबालिक एज, बाडीफैट, डिहाइड्रेशन, पल्स रेट, मसल मास आदि की जांच भी कर सकता है। 2023 में जब हेल्थ एटीएम लगाए गए थे, उस समय इनके खराब होने की बात भी सामने आई थी। अब विभाग ने इसके लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया है और जो हेल्थ एटीएम खराब हुए थे, उन्हें ठीक कराया गया है। हेल्थ एटीएम में किसी यात्री के साथ कोई परेशानी पाई जाती है तो टेलीमेडिसन के जरिए से विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श लिया जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध रहेगी।

वैज्ञानिकों ने ब्रेस्ट कैंसर के इलाज के लिए खोजा नया तरीका

क्वींसलैंड। ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के इलाज के लिए एक नई राह खोजी है। क्वींसलैंड विश्वविद्यालय के ऑस्ट्रेलियाई जैव अभियांत्रिकी और नैनो प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईबीएन) के वैज्ञानिकों ने एक नया लौह-आधारित नैनोकण विकसित किया है, जिसे नैनो-एडजुवेंट कहा जा रहा है। यह नैनोकण कैंसर के ट्यूमर माइक्रो-एनवायरनमेंट में जाकर शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करेगा और टी-कोशिकाओं को कैंसर से लड़ने में अधिक प्रभावी बनाएगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह तकनीक इम्यूनोथेरेपी को अधिक प्रभावी बना सकती है और शरीर को स्वयं ही कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में सक्षम बना सकती है। इस शोध का नेतृत्व कर रहे प्रोफेसर यू चेंगझोंग के अनुसार, पारंपरिक उपचारों की तुलना में यह नैनो टेक्नोलॉजी अधिक कारगर साबित हो सकती है। ट्रिपल-नेगेटिव ब्रेस्ट कैंसर में उन प्रोटीन की कमी होती है, जिन्हें आमतौर पर कैंसर उपचार में निशाना बनाया जाता है, जिससे इसकी चिकित्सा चुनौतीपूर्ण हो जाती है।

जिला अध्यक्षों से मंडल पदाधिकारियों और कार्यसमिति के गठन की ली गई जानकारी

भाजपा जिलाध्यक्षों, प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक में शामिल हुए मुख्यमंत्री

समय जगत, भोपाल। प्रदेश भाजपा कार्यालय में मप्र के सभी भाजपा जिला अध्यक्षों, पूर्व जिला अध्यक्षों, संभाग और जिला प्रभारियों, प्रदेश पदाधिकारियों की बैठक हुई। इस बैठक में सीएम डॉ मोहन यादव, बीजेपी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा मुख्य रूप से मौजूद थे। बैठक में जिला अध्यक्षों से मंडल पदाधिकारियों और कार्यसमिति के गठन की जानकारी ली गई। जिला अध्यक्षों से जिले वार मंडल कार्यसमिति और पदाधिकारियों की नियुक्ति के बारे में पूछा गया। जिला अध्यक्षों, जिला प्रभारियों को जानकारी साथ लेकर आने के निर्देश दिए गए थे।

बैठक में आजीवन सहयोग निधि की जिलेवार समीक्षा, 6 अप्रैल को बीजेपी के स्थापना दिवस की तैयारी, 14 अप्रैल को भीमराव अंबेडकर की जयंती के कार्यक्रमों की तैयारी पर चर्चा हुई। बैठक में भिंड सांसद संध्या राय, सागर सांसद लता वानखेड़े, होशंगाबाद सांसद दर्शन सिंह चौधरी, भोपाल सांसद आलोक शर्मा, राज्यसभा सांसद माया नरोलिया, सुमित्रा बाल्मीक, विधायक चिंतामणि मालवीय, अनिल जैन कालूहेड़ा, हरिशंकर खटीक सहित पार्टी के कई तमाम पदाधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन ने किया हॉस्पिटल का लोकार्पण

समय जगत, उज्जैन/ भोपाल। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने बड़नगर के कावरा हॉस्पिटल का लोकार्पण किया। इस दौरान सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक जितेंद्र सिंह पंड्या मौके पर मौजूद रहे। यह हॉस्पिटल भगवती माता मंदिर मार्ग पर लगभग एक बीघा भूमि पर निर्मित किया गया है। और इसमें अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। काबरा हॉस्पिटल को हाईटेक सर्व-फैसिलिटी युक्त अस्पताल के रूप में तैयार किया गया है। जहां मरीजों को बेहतर उपचार मिल सकेगा। जो बड़े अस्पतालों में देखे जाते थे वही इस अस्पताल में आधुनिक मशीनरी और चिकित्सा उपकरण उपलब्ध किए गए हैं। विशेष रूप से इमरजेंसी मरीजों के लिए हेलीकॉप्टर लैंडिंग की सुविधा भी उपलब्ध है। जिससे गंभीर मरीजों को समय पर इलाज मिल सकेगा।

सेहत के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है 'फालसा' फल

नई दिल्ली। गर्मी के मौसम में एक खास फल 'फालसा' जल्द ही बाजारों में दिखाई देने वाला है। छोटे आकार और खट्टे-मीठे स्वाद वाला यह फल न केवल स्वादिष्ट होता है, बल्कि सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद माना जाता है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों ही 'फालसा' को स्वास्थ्यवर्धक बताते हैं, क्योंकि यह पाचन तंत्र से लेकर दिल और डायबिटीज जैसी समस्याओं के लिए लाभकारी साबित होता है। फालसा को भारत का स्वदेशी फल माना जाता है और इसकी खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों में होती है। इसे वैज्ञानिक रूप से 'ग्रेविया एशियाटिका' कहा जाता है और यह भारत के शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। हालांकि, इसकी नाजुक बनावट के कारण इसे लंबी दूरी तक ले जाना मुश्किल होता है, इसलिए यह बाजारों में सीमित समय के लिए ही उपलब्ध रहता है। अमेरिकी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ के मुताबिक, फालसा में विटामिन ए और सी, कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, पोटैशियम और फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है।

भूकंप से कब्रिस्तान में तब्दील हुआ म्यांमार का बड़ा शहर

मांडले। तीन दिन पहले आए विनाशकारी भूकंप में 1700 से अधिक लोगों की मौत हो गई और अनगिनत लोग जगह-जगह मलबे में दब गए। म्यांमार में मरने वालों की संख्या 1710 पहुंच गई है, जबकि 5000 से अधिक घायल है और लगभग 4000 लापता बताए जा रहे हैं। अब हालात ये हैं कि म्यांमार के दूसरे सबसे बड़े शहर मांडले की सड़कों पर पड़े शवों से अब भयानक दुर्गंध फैलनी शुरू हो गई है और उधर लोग अब भी अपने परिजनों की खोज में हाथों से मलबा हटाने में जुटे हुए हैं। स्थानीय लोग बिना भारी उपकरणों की मदद के जीवित बचे लोगों की तलाश में जुटे हैं और 41 डिग्री सेल्सियस की गर्मी में हाथों और फावड़ों से मलबा हटाने को मजबूर हैं। रविवार दोपहर को आए 5.1 तीव्रता के झटकों के बाद सड़कों पर मौजूद लोगों में चीख-पुकार मच गई। हालांकि थोड़ी देर बाद फिर से काम शुरू हो गया। मांडले में रहने वाले 15 लाख लोगों में से कई लोगों ने रात सड़कों पर बिताई। बहुत से लोग भूकंप के कारण बेघर हो गए हैं। भूकंप ने पड़ोसी देश थाईलैंड को भी हिलाकर रख दिया और वहां कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई।

योजना

वन विभाग और डब्लूडब्लूएफ उठाएगा प्रभावी कदम

तेज रफ्तार वाहनों के चलते हो रही है वन्यजीवों की मौत

हल्द्वानी। जंगलों के बीच से गुजरी सड़क से गुजरना वन्यजीवों के लिए खतरा साबित होता है। तेज रफ्तार गाड़ियों की चपेट में आने से बाघ, हाथी, हिरण और बंदरों की जान जा चुकी है। इंसानी सुविधाओं के लिए जंगल के बीचों बीच सड़कें तो बना ली गई लेकिन हम भूल गए जंगलों पर पहला अधिकार वन्यजीवों का है। इन बेजुबानों को बचाने के लिए वन विभाग और डब्लूडब्लूएफ शोध शुरू करने जा रहा है। जगह-जगह लगे ट्रैप कैमरे बताएंगे कि हाईवे पर कब वन्यजीवों का अधिकार होगा। तराई के जंगलों की भौगोलिक परिस्थितियों के हिसाब से हल्द्वानी-रुद्रपुर हाईवे बेहद अहम है। इस सड़क को पार करके जंगली जानवर दूसरे जंगल में पहुंचते हैं। बेलबाबा से पंतनगर मोड़ तक की इस सड़क को आमतौर पर टांडा जंगल कहा जाता है। अलग-अलग रेंजों का हिस्सा सड़क के दोनों तरफ है। टांडा रेंज के जंगल को पार करने के बाद लालकुआं की तरफ गौला हाथी कोरीडोर है, जिसके जरिये हाथियों का झुंड डौली रेंज से चोरगलिया व अन्य जगहों तक पहुंचता है। इसलिए न विभाग के नक्शे में इसे गौला कोरीडोर का नाम दिया गया है। लेकिन बेलबाबा से पंतनगर मोड़ के बीच कई बार सड़क को पारकर दूसरे जंगल में पहुंचना वन्यजीवों के लिए मौत की वजह बनता है। गाड़ियों की तेज रफ्तार को कम करने से जुड़े बोर्ड तो लगे हैं। उसके बावजूद हादसों पर ब्रेक नहीं लग सका है। ऐसे में वन विभाग और डब्लूडब्लूएफ की टीम मिलकर दीर्घकालिक उपाय को लेकर अध्ययन कर रही है। हल्द्वानी-रुद्रपुर हाईवे के जंगल क्षेत्र से लेकर लालकुआं की तरफ पड़ने वाले कोरीडोर से जुड़ी बरेली रोड पर ट्रैप कैमरे लगाए जाएंगे। ताकि यह पता चल सके कि वन्यजीवों के सड़क को पार करने का ज्यादातर समय कौन सा होता है। क्रासिंग क्षेत्र कौन-कौन से है और किस सीजन में मूवमेंट होता है। शोध रिपोर्ट सामने आने के बाद बचाव को लेकर उपाय किए जाएंगे। लामाचौड़ के भाखड़ा पुल से रामनगर तक की सड़क भी वन्यजीवों के लिहाज से संवेदनशील है। ये हाईवे भी दो जंगलों को अलग करता है। इसलिए भविष्य में इसे भी अध्ययन में शामिल किया जाएगा। हाईवे पर हुई घटनाओं में जनवरी 2021 में फतेहपुर में इनोवा की टक्कर से बाघ की मौत, जनवरी 2024 में टांडा जंगल में कार की टक्कर से बाघ की मौत, अक्टूबर 2024 में बेलबाबा से नीचे बस की टक्कर से हथिनी की जान चली गई वहीं फरवरी 2025 में टांडा जंगल में हुए हादसे में बाघ के शावक की मौत हो गई थी।

वन विभाग और डब्लूडब्लूएफ की टीम ट्रैप कैमरों के जरिए से अध्ययन शुरू करने जा रही है। इसके अलावा तराई में ट्रेन की चपेट में आने से भी वन्यजीवों की जान जा चुकी है। एआइ तकनीक के इस्तेमाल से भी पटरी के आसपास मौजूद हाथियों के झुंड का पता लगाया जा सकता है। वन विभाग के मुताबिक संवेदनशील समय का पता लगने पर सुरक्षा के इंतजाम किए जाएंगे। कहां ब्रेकर लगेगा। किस समय ट्रैफिक को रोकना है। कौन सा क्रासिंग सबसे अहम है। ये सभी आंकड़े जुटाए जाएंगे।

चीन में शादी की दर में भारी गिरावट हुई दर्ज

बीजिंग। पिछले कुछ सालों में चीन में शादी की दर में भारी गिरावट दर्ज की गई है। बढ़ती महंगाई, बदलते सामाजिक मूल्यों और महिलाओं की स्वतंत्रता की ओर बढ़ती सोच के चलते शादी से दूरी बनाने का चलन बढ़ रहा है।

2024 में केवल 6.1 मिलियन जोड़ों ने शादी के लिए रजिस्ट्रेशन कराया, जो 2023 की तुलना में 20 प्रतिशत कम है। यह संख्या 1986 के बाद की सबसे कम है। कोविड-19 महामारी के दौरान भी शादी की दर में 12.2 प्रतिशत की गिरावट आई थी, लेकिन मौजूदा आंकड़े हालात को और गंभीर दर्शा रहे हैं। शादी की घटती दर के पीछे चीन की पूर्व वन चाइल्ड पॉलिसी का भी बड़ा योगदान है। इस नीति के कारण देश में लिंग अनुपात असंतुलित हो गया। 2000 के दशक की शुरुआत में जन्म के समय लिंग अनुपात 121 लड़कों के मुकाबले 100 लड़कियों का था, जबकि कुछ प्रांतों में यह अनुपात 130 से भी ज्यादा पहुंच गया था। नतीजतन, बड़ी संख्या में पुरुषों के लिए शादी करना मुश्किल हो गया है। रिपोर्टों के मुताबिक, 2020 से 2050 के बीच 3 से 5 करोड़ चीनी पुरुष शादी के लिए दुल्हन नहीं ढूंढ पाएंगे, जिससे 'लेफ्टओवर मेन' नामक एक सामाजिक संकट खड़ा हो गया है। शादी के लिए महिलाओं की कमी ने चीन में मैरिज ट्रैफिकिंग के गोरखधंधे को जन्म दिया है।

भारतीय नवसंवत्सर की वैज्ञानिकता विश्व विदित : सह प्रांतप्रचारक मुनीश जी

समाज में जागरण की आवश्यकता : महानगर प्रचारक सक्षम

45 स्थानों पर हुआ आद्य सरसंघचालक प्रणाम कार्यक्रम,20 बस्तियों में निकाला गया पथ संचलन

समय जगत, झांसी। चैत्र प्रतिपदा भारतीय नव संवत्सर को सृष्टि के सृजन दिवस व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसे संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के जन्मोत्सव के रूप में भव्यता के साथ मनाया। इस अवसर पर महानगर में 20 स्थानों पर स्वयंसेवकों ने अनुशासित होकर पथ संचलन निकाला। तो वहीं कुल 45 स्थानों पर आद्य सरसंघचालक प्रणाम के कार्यक्रम को भी आयोजित किया गया। इस दौरान ध्वज प्रणाम के साथ सभी स्थानों पर वक्ताओं ने भारतीय नवसंवत्सर को न केवल प्राचीन परंपरा बल्कि उसे वैज्ञानिकता के आधार पर भी विश्व में सर्वश्रेष्ठ बताया।

वासुदेव नगर में पठला के हनुमान मंदिर से पथ संचलन निकालने के बाद स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कानपुर प्रान्त के सह प्रांत प्रचारक मुनीश जी ने बताया कि भारतीय नवसंवत्सर की वैज्ञानिकता को पूरा विश्व मानता है। इसे यूं ही सृष्टि के सृजन दिवस के रूप में नहीं मनाया जाता। बल्कि प्रकृति आज से अपने स्वभाव को परिवर्तित करते हुए नजर भी आती है। इस दौरान कार्यक्रम में नगर संघ चालक रामप्रसाद, नगर प्रचारक विनय व देवांश समेत सैकड़ों स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

वहीं दुर्ग नगर में मुन्नालाल धर्मशाला से भारी संख्या में दुर्ग नगर के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। अनुशासित ढंग से कदम से कदम मिलाकर निकाले गए पथ संचलन को ओरछा गेट होते हुए सैयर गेट उसके बाद मिनर्वाचौक फिर रानी महल और गंज होते हुए मुन्नालाल धर्मशाला पर संपन्न किया गया। इस दौरान बौद्धिक महानगर प्रचारक सक्षम जी का रहा। उन्होंने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए भारतीय नव संवत्सर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार जी के जन्मोत्सव पर सभी को मंगल कामनाएं देते हुए संबोधित किया। कहा कि किसी भी विषय की प्रासंगिकता तब रह जाती है जब उसे जानने वाले लोग उसे मन भी उन्होंने कहा कि हिंदू नव वर्ष हमारे परिवारों में आंग्ल नव वर्ष से बेहतर ढंग से परंपराओं के अनुसार मनाए जाने चाहिए। इसके लिए समाज में जागरण की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि भारतीय नव संवत्सर की वैज्ञानिकता को विश्व मानता है प्रकृति भी अपने रूप को परिवर्तित करते हुए सृजन के संकेत देती है। इस अवसर पर मनोज नगरिया, विष्णु गुप्ता, गौरव, अभय व नंदकिशोर समेत सैकड़ो स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

शिवाजी नगर में परीक्षा भवन से स्वयंसेवकों द्वारा पथ संचलन निकाला गया। इस दौरान विभाग कार्यवाह धर्मेंद्र के द्वारा बौद्धिक दिया गया। इस अवसर पर अतीत विजय,विनोद, सुरेश पुरोहित यशवंत आदि सैकड़ो स्वयंसेवक उपस्थित रहे। आवास विकास की विवेकानंद शाखा द्वारा भी पद संचलन का आयोजन किया गया यहां पर मुख्य वक्ता के रूप में सह विभाग कार्यवाह शशिकांत ने संघ संस्थापक डॉ हेडगेवार के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने भारतीय नव संवत्सर की विश्व में प्रासंगिकता को भी समझाया। हंसारी के राम लखन विद्यालय में भी पथ संचलन का आयोजन किया गया । यहां पर विभाग संघ चालक शिवकुमार भार्गव ने स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें नव संवत्सर और डॉक्टर साहब के जीवन के विविध संस्मरणों की जानकारी दी। राजगढ़ में पद संचलन निकालकर नगर करवा आनंद जी ने स्वयं सेवाओं के मार्ग को प्रशस्त करते हुए उन्हें सरसंघचालक डॉक्टर सिर के बाहर के जीवन मैं आने वाले संघर्षों की जानकारियां दी लव कुश विद्यालय में सायं महानगर प्रचारक सौरभ जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने स्वयंसेवकों का पथसंचलन के बाद मार्गदर्शन किया। भानी देवी गोयल विद्यामंदिर में भी पथ संचलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृत भारती के प्रांत महामंत्री महेश श्रीवास्तव ने स्वयंसेवकों को संबोधित किया। पंचवटी के जेडीए पार्क में भी पथसंचलन आयोजित किया गया। नगर संघ चालक रामप्रसाद ने सभी स्वयंसेवकों को भारतीय नवसंवत्सर का महत्व समझाया। थापक बाग में पथसंचलन के बाद नगर बौद्धिक प्रमुख कप्तान जी ने सभी को पाथेय प्रदान किया।

इसके अलावा खाती बाबा ए में महानगर धर्म जागरण प्रमुख रवि गोस्वामी ने पथसंचलन के बाद सभी स्वयंसेवकों को संबोधित किया। आवास विकास बी में मुख्य वक्ता के रूप में नगर कार्यवाह पुष्पेंद्र ने विचार रखे। आवास विकास की अरविंद बस्ती में नगर संपर्क प्रमुख अखिलेश तिवारी ने बौद्धिक दिया। अग्रसेन विद्यालय में भी पथसंचलन के बाद नगर बौद्धिक प्रमुख हरिओम ने अपने विचार रखे। माधव नगर टीआरएस पार्क में सभी 8 बस्तियों के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। उन्हें महानगर सह संपर्क प्रमुख ने मुख्य वक्ता के रूप में नवसंवत्सर व सृष्टि के सृजन का महत्व समझाया।

छावनी नगर में महाराजा अग्रसेन भवन से पथ संचलन निकाला गया। मुख्य वक्ता के रूप में महानगर प्रचारक सक्षम ने स्वयंसेवक को संबोधित किया। इस अवसर पर महानगर संघ चालक सतीश शरण अग्रवाल,नगर संघ चालक सुरेंद्र खंडेलवाल, योगेंद्र शरण, सूर्या, रमाकांत, सुधांशु ,अनुराग, व वैभव आदि उपस्थित रहे। बिजौली में पथसंचलन के बाद महानगर शारीरिक प्रमुख सुधांशु साहू ने स्वयंसेवकों को भारतीय नववर्ष की महत्ता समझाई। खैलार में नगर बौद्धिक प्रमुख रामकुमार पांडेय,साकेत बस्ती में नगर प्रचारक अमन,व तिलक नगर में नगर संघ चालक मोहन सोनी ने स्वयंसेवकों का प्रबोधन किया।

डॉ संदीप के मुख्य आतिथ्य में होली मिलन समारोह एवं राई नृत्य का हुआ आयोजन

समय जगत, झाँसी। मन्नू बाबा सेवा समिति सुभासगंज के तत्वाधान में सुभाष गंज में होली मिलन समारोह में राई नृत्य और फूलों की होली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जनपद के प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं संघर्ष सेवा समिति के संस्थापक डॉ0 संदीप सरावगी उपस्थित रहे। अतिथियों के आगमन पर आयोजक मंडल द्वारा तिलक व माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। विधिवत पूजन अर्चन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई, कार्यक्रम में सर्वप्रथम बुंदेली कलाकारों दीपा एवं सहयोगियों द्वारा बुंदेलखंडी राई नृत्य का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों एवं आगंतुकों द्वारा करतल ध्वनि के साथ कलाकारों का अभिवादन किया गया। कलाकारों द्वारा अतिथिगण एवं आगंतुकों पर पुष्प वर्षा कर उनका अभिवादन किया गया, साथ ही कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मनोज साहू एवं मनोज रेजा उपस्थित रहे कार्यक्रम में मजदूर भाईयों का भी विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर डॉक्टर संदीप ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्तजनों को होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा होली रंगों से भरा त्यौहार है जो हमारे जीवन में खुशहाली लेकर आता है। साथ ही यह असत्य व अधर्म पर भक्ति व सत्य की जीत का प्रतीक पर्व है। हमारे त्योहारों से संबंधित कथाओं में जीवन जीने की शैली का संदेश दिया गया है हमें उनका अपने जीवन में समावेश करना चाहिये। कार्यक्रम के सफल आयोजन में मुख्य रूप से आयोजक समिति से हरेंद्र सक्सेना, मनमोहन साहू, हिमांशु पाठक, करन विश्वकर्मा, विकास पाल, टिल्लू श्रीवास, मुन्ना, प्रदीप कुमार साहू, अर्जुन यादव आदि का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर संघर्ष सेवा समिति से आशीष विश्वकर्मा, अरुण पांचाल, सुशांत गेड़ा, राजू सेन, संदीप नामदेव, बसंत गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

देश के लिए अमन चैन की मांगी दुआ

समय जगत, झांसी। अन्दर सैंयर गेट झांसी स्थित इंतजामिया कमेटी मस्जिद सदन सदर जनाब नायब अब्बासी तथा सेक्रेटरी जनाब एहसान खान ने बताया कि ईद - उल- फितर की नमाज आज प्रातः 8.30 बजे जनाब मौलाना एहतिशाम नदबी द्वारा अदा कराई गई। नमाज के बाद मौलाना नबदी ने देश के लिए अमन चैन की दुआ मांगी तथा ईद - उल - फितर की सभी मुबारकबाद दी।

विविध क्षेत्रों में लगेगी जीएसटी की पाठशाला रजत जयंती वर्ष के लोगो का हुआ विमोचन

समय जगत, झांसी । आज उत्तर प्रदेश व्यापार मंडल की एक बैठक केंद्रीय कार्यालय पर संगठन के प्रदेश अध्यक्ष संजय पटवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई !

जिसमें जीएसटी की के बदलती नियम एवं विसंगतियां को लेकर व्यापारियों को जानकारी देने के लिए यह निर्णय लिया गया कि विभिन्न क्षेत्रों में विभागीय अधिकारियों के साथ व्यापार मंडल जीएसटी की पाठशाला लगाकर व्यापारी को नियम, कानून एवं फॉर्म भरने की जानकारी देंगे, बताया गया है कि जब से जीएसटी लगा है जब से अब तक 14000 से ज्यादा जीएसटी में संशोधन किए जा चुके हैं ऐसे में व्यापारियों को नियमों की सही जानकारी नहीं हो पाती है जिस व्यापारी भ्रमित एवं परेशान रहता है इसलिए व्यापार मंडल विभिन्न क्षेत्र एवं बाजारों में यह पाठशाला लगाएगा !

इस अवसर पर रजत जयंती वर्ष का लोगों का भी विमोचन किया गया व निर्णय लिया गया कि इस वर्ष संगठन वर्ष के रूप में बनाएगा, बैठक में प्रमुख रूप से कैट के प्रदेश महामंत्री कुलदीप सिंह दांगी, जिला अध्यक्ष उत्तर प्रदेश व्यापार मंडल अरुण गुप्ता, जिला अध्यक्ष कैट अभिषेक सोनकिया, विवेक बाजपेई, सोनू उपाध्याय, शुभम गुप्ता, मानसिंहपाल, शिवम कुशवाहा, आदि ने अपने विचार व्यक्त किया कार्यक्रम का संचालन महानगर अध्यक्ष पंकज शुक्ला एवं आभार कैट की युवा जिला अध्यक्ष कृष्णा राय ने व्यक्त किया ।

महानगर की उभरती नन्ही तारिका कहकशां ने एक बार फिर किया नाम रोशन

वाराणसी में आयोजित कार्यक्रम में बॉलीवुड एक्ट्रेस ईशा कोप्पिकर ने दिया फर्स्ट विनर का अवार्ड

समय जगत, झांसी। सहेली फाउंडेशन द्वारा फेमस आईकॉनिक अवार्ड 2025 का आयोजन वाराणसी में किया गया ,जिसमें मुख्य अतिथि कयामत, कृष्णा कॉटेज, एक विवाह ऐसा भी,आमदनी अठन्नी ,खर्चा रुपया आदि फिल्मों की ख्याति प्राप्त अभिनेत्री ईशा कोप्पीकर के साथ ही ज़ी टीवी एक्ट्रेस रियंका चंदा उपस्थित रहीं। मॉडलिंग के इस कार्यक्रम में झांसी की महज़ 11 वर्ष की कहकशां कुशवाहा ने भी हिस्सा लिया ।बड़े-बड़े शहरों से महिलाओं , बच्चों के साथ ही हर उम्र के लोगों ने हिस्सा लिया। जिसमें कहकशां कुशवाहा को मॉडलिंग में फर्स्ट विनर का अवार्ड बॉलीवुड एक्ट्रेस ईशा कोप्पिकर द्वारा प्रदान किया गया। शिवाजी नगर निवासी अरविंद कुशवाहा की पुत्री व रेलवे से सेवानिवृत्त गौरी शंकर कुशवाहा की पौत्री कहकशां पहले भी शक्ति कपूर, राहुल रॉय, प्रीति झिगयानी, अमीषा पटेल, मीनाक्षी शेषाद्री आदि जैसे ख्याति प्राप्त बॉलीवुड कलाकारों से अवार्ड हासिल कर चुकी है । जल्द ही कहकशां अभिनीत बॉलीवुड फिल्म मिस बुंदेलखंड द वूमेन पावर भी रिलीज होने वाली है।कहकशा कुशवाहा ने यह अवार्ड प्राप्त कर झांसी महानगर ही नहीं संपूर्ण बुंदेलखंड का नाम रोशन किया है ।

शिक्षा सेवा के उज्ज्वल अध्याय का समापन : जितेन्द्र दीक्षित

अरुण कुमार शुक्ला का किया भावभीना सम्मान

समय जगत , झांसी । उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने वाले मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक श्री अरुण कुमार शुक्ला जी के सेवानिवृत्ति के अवसर पर एक गरिमामयी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस विशेष अवसर पर उत्तरप्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ एवं बुंदेलखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारियों ने उनका भव्य अभिनंदन किया। समारोह में शिक्षा जगत से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्ति, शिक्षकगण एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

समारोह में श्री अरुण कुमार शुक्ला जी को उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पुष्पमालाओं से अलंकृत किया गया। उन्हें संघ की ओर से एक विशेष स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया, जो उनके शिक्षा क्षेत्र में दिए गए योगदान का प्रतीक बना। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षकों और पदाधिकारियों ने उनके समर्पण एवं कुशल नेतृत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की।श्री शुक्ला जी ने अपने लंबे कार्यकाल में शिक्षा क्षेत्र में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए। उन्होंने शिक्षकों की बेहतरी के लिए कई प्रभावशाली योजनाओं को लागू किया और शिक्षण पद्धति को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी प्रशासनिक दक्षता और शिक्षकों के प्रति संवेदनशीलता ने उन्हें शिक्षकों एवं अधिकारियों के बीच अत्यंत सम्माननीय स्थान दिलाया।संघ के पदाधिकारियों ने उनके योगदान को नमन करते हुए कहा कि श्री शुक्ला जी हमेशा शिक्षकों के अधिकारों के प्रति सजग रहे। उन्होंने शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार करने के लिए कई नवाचार किए, जिनका लाभ आगामी पीढ़ियों को भी मिलता रहेगा। उनकी प्रेरणादायी कार्यशैली और नेतृत्व क्षमता आने वाले वर्षों तक प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।

इस गरिमामयी अवसर पर उत्तरप्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ एवं बुंदेलखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे। समारोह में प्रांतीय उपाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष झांसी जितेन्द्र दीक्षित, जिला महामंत्री मृत्युंजय सिंह, संयुक्त मंत्री शिवकुमार पाराशर, जिलाध्यक्ष झांसी बीपीएसएस डॉ. अनिरुद्ध रावत, नगर सोसायटी के सभापति भारत भूषण राय, अरुण गुप्ता, डॉ. ब्रजेश दीक्षित, डॉ. अखिलेश गोस्वामी, ब्लॉक अध्यक्ष मोंठ बिपिन सिंह, मुकेश सिंह, अमित गुप्ता सहित अनेक शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने एक स्वर में शुक्ला जी के सेवाकाल की सराहना की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अपने कार्यकाल के दौरान शुक्ला जी ने शिक्षकों की समस्याओं को दूर करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए। उन्होंने शिक्षकों की प्रोन्नति, वेतनमान में सुधार, स्थानांतरण प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने तथा विभिन्न प्रशासनिक अड़चनों को दूर करने में अहम भूमिका निभाई। उनकी नीतियों और दूरदर्शिता के कारण शिक्षा विभाग में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिले।संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि श्री शुक्ला जी ने न केवल शिक्षकों के अधिकारों की रक्षा की, बल्कि शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने में भी अग्रणी भूमिका निभाई। उनका संघर्षशील और संवेदनशील व्यक्तित्व शिक्षा विभाग के लिए एक मिसाल बना रहेगा।

श्री अरुण कुमार शुक्ला जी की सेवानिवृत्ति के अवसर शिक्षकों ने कहा कि उनके मार्गदर्शन में शिक्षा प्रणाली ने नए आयाम स्थापित किए हैं और उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा एवं शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान अमिट रहेगा और वे आने वाले वर्षों में भी शिक्षा और समाज सेवा से जुड़े रहकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे। उनकी विदाई शिक्षा विभाग के लिए एक अपूरणीय क्षति है, लेकिन उनकी शिक्षाएं और कार्यशैली भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी।सम्मान समारोह के अंत में जिलाध्यक्ष जितेंद्र दीक्षित एवं सभी उपस्थितजनों ने श्री शुक्ला जी को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। संघ के पदाधिकारियों ने उनके स्वस्थ, सुखमय और दीर्घायु जीवन की कामना की। शुक्ला जी ने भी अपने विदाई संदेश में सभी शिक्षको का आभार व्यक्त किया और कहा कि वे शिक्षा क्षेत्र से जुड़े रहकर समाज सेवा में अपना योगदान देते रहेंगे।इस अवसर पर झांसी की शिक्षा जगत में श्री शुक्ला जी के योगदान को सदा स्मरणीय बनाए रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।

आसरा एनजीओ ने बचाई बुजुर्ग महिला की जान

आसरा एनजीओ के मानवीय पहलुओं की हर तरफ हो रही तारीफ

समय जगत, झांसी। आसरा एनजीओ ने बचाई बुजुर्ग महिला की जान सड़क पर कई दिनों से बीमार पड़ी बुजुर्ग महिला को समय रहते बंटी शर्मा ने अपनी गाड़ी से पहुंचाया अस्पताल आसरा एनजीओ के मानवीय पहलुओं की हर तरफतारीफ हो रही है आसरा एनजीओ के महासचिव बंटी शर्मा ने सड़क बीमार बुजुर्ग महिला को समय पर अस्पताल पहुंचाकर उसकी जिंदगी बचा ली। यही वजह है कि इस आसरा एनजीओ की लोग दिल से तारीफके साथ इनको सलाम कर रहे हैं दरअसल ओम शांति नगर काली माता मंदिर के पास गंभीर रूप से बुजुर्ग महिला कई दिनों से बीमार पड़ी थी जमीन पर ही तड़पती रही ।

इस दौरान वहां काफी भीड़ जमा हो गई जो सिर्फतमाशबीन बन बुजुर्ग महिला को तड़पते हुए देख रही थी। इसी दौरान वहां से गुजर रहे आसरा एनजीओ की (अध्यक्ष) पूजा शर्मा भीड़ को देखकर रुकी और बुजुर्ग महिला को गंभीर हालत में देखा तो उन्होंने एंबुलेंस को कॉल डायल किया कुछ देर बाद एंबुलेंस आई एवं उसकी इमरजेंसी मेडिकल पहुंचाया गया जहां ईएमओ डॉ राणा ने तुरंत इलाज शुरू हुआ जो कि सफल रहा, ऐसे में समय पर इलाज मिलने के साथ अच्छी देखभाल के चलते बुजुर्ग महिला की जिंदगी बच गई इस दौरान टीम के सदस्य पूजा शर्मा (अध्यक्ष) आसरा सोसाइटी एनजीओ बंटी शर्मा ,राजीव पाल, कैलाश कुशवाहा, अरविंद,अभिषेक अहिरवार ,संजय, आदि लोग मौजूद रहे।

डॉ. हेडगेवार के जन्मदिवस पर संघ के स्वयंसेवकों ने किया सम्पर्क

समय जगत, समथर । हिंदू नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 2082 युगाब्द 51 27 मोंठ खण्ड के साकिन मण्डल के ग्रामो ईमलिया स्टेट लोहागढ़ साकिन मडोरा ऐरा आदि ग्रामो मे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक परम पूज्य डा. केशव बलिराम हेडगेवार जी के जन्म दिन पर ग्रामो में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा बर्ष प्रतिपदा कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे जिला सेवा प्रमुख प्रभाकान्त मिश्रा एवं खण्ड सेवा प्रमुख शिशुपाल सिंह जी का पाथेय प्राप्त हुआ । संघ के स्वयं सेवकों द्वारा घर घर जाकर लोगो को नव वर्ष की शुभकामनाए दी । इस अवसर पर मण्डल प्रमुख साकिन रामनरेश पाल हुकुम सिंह पाल खण्ड प्रचार प्रमुख धर्मेंद्र जी रवि जी आन्नद जी बीरपाल जी मुन्नू राजा तंदुल सिंह पवन मिश्रा राघवेन्द्र पटसारिया योगेन्द्र सिंह सेरसा आदि स्वयंसेवक बंधु उपस्थित रहे ।

सपा नेताओं ने ईदगाह पहुंचकर दी ईद की मुबारकबाद

झांसी । आज समाजवादी पार्टी के नेताओं ने ईदगाह पहुंचकर मुस्लिम भाइयों को ईद की मुबारक दी उक्त अवसर पर डॉक्टर चंद्रपाल सिंह यादव पूर्व सांसद पूर्व मंत्री अजय सूद अरविंद वशिष्ठ सुदेश पटेल सीताराम कुशवाहा आदि उपस्थित रहे ।

गले मिलकर दी ईद की मुबारकबाद

गुरसरांय। नगर में ईद के अवसर पर सभी ने एक दूसरे को गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी।हिन्दू मुस्लिम भाइयों ने प्रेम सौहार्द के साथ एक दूसरे के गले मिलकर बधाई दी।

सर्व नगर में आईपीएल का सट्टा पकड़ा गैंग में ग्राम प्रधान सहित पांच गिरफ्तार, गैंग लीडर फरार

समय जगत, झांसी। आईपीएल सीजन शुरू होते ही सटोरिए ओर उनका गैंग पूरी तरह से सक्रिय हो गया है। आईपीएल में लगने वाले चौके छक्कों पर सट्टे की बुकिंग करने वाले सक्रिय हो गए तो वही पुलिस ने भी इन सटोरियों का चक्रव्यूह तोड़ने के लिए अपनी कमर कस ली। देर रात स्वाट टीम ओर सीपरी पुलिस ने एसएसपी श्रीमती सुधा सिंह के निर्देशन में सटोरियों के खिलाफ अभियान चलाते हुए सर्व नगर कॉलोनी में छापेमारी कर ग्राम प्रधान सहित पांच सट्टा बुकिंग करने वालों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस टीम ने इनके कब्जे से हजारों की नकदी, टीवी मोबाइल फोन आदि बरामद कर लिए है। पुलिस इनके अन्य साथीयों की तलाश कर रही है। सोमवार को पुलिस मीडिया सेल की ओर से जारी किए गए प्रेस नोट के मुताबिक एसएसपी के निर्देशन में चलाए जा रहे अपराध और अपराधियों के खिलाफ अभियान के तहत स्वाट टीम ओर सीपरी पुलिस ने सीपी मिशन कंपाउंड स्थित सर्व नगर में प्लेटिनम अपार्टमेंट में छापेमारी कर रक्सा के ग्राम पुनावली निवासी ग्राम प्रधान राजा गुर्जर उर्फ जय सिंह, गुरसराय के गड़वाई निवासी अजय मिश्रा, बड़ागांव के दोनदुनारा निवासी अतुल गुप्ता, भगवंत पुरा निवासी शशांक दीक्षित, गुरसराय के अतसुवा निवासी अनुज पटेल को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से आठ मोबाइल, तीन डायरी, पेन,ढेरों एटीएम कार्ड, कागज, 58 हजार चार सौ रुपए सहित अन्य दस्तावेज बरामद किए। पुलिस ने बताया कि यह लोग आईपीएल का सट्टा खिलाते है, ओर इनकी गैंग का लीडर धर्मेंद्र साहू सहित पांच लोग फरार है, ओर यह पूरा गैंग गौतम बुद्ध नगर में दो वर्ष पूर्व पकड़े गए महादेव के एजेंटों से संपर्क में है। इन सभी की जांच पड़ताल कर सभी पर निरोधात्मक कार्यवाही की।

दिल्ली की परिवहन व्यवस्था होगी सुदृढ़ फेज-5 की योजना पर काम हुआ शुरू

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो एनसीआर में दायरा बढ़ाएगी। फेज-5 में जो कॉरिडोर प्रस्तावित हैं वे दिल्ली की सीमाओं से सटे जिलों के लोगों के लिए अहम हैं। फेज-5 के तहत 18 कॉरिडोर प्रस्तावित हैं। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने नेटवर्क के विस्तार के लिए फेज-5 की योजना पर काम शुरू कर दिया है। यह दिल्ली-एनसीआर में परिवहन व्यवस्था को और सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। फेज-5 के तहत 18 कॉरिडोर प्रस्तावित हैं। खास बात यह है कि इस बार दिल्ली मेट्रो एनसीआर में दायरा बढ़ाएगी। फेज-5 में जो कॉरिडोर प्रस्तावित हैं वे दिल्ली की सीमाओं से सटे जिलों के लोगों के लिए अहम हैं। एनसीआर से दिल्ली में आवाजाही करने वाले लाखों लोगों को ध्यान में रखते हुए कॉरिडोर के प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। इससे न केवल दिल्ली में निजी वाहनों की आवाजाही कम होगी, बल्कि वाहनों से होने वाले प्रदूषण में भी कमी आएगी। फेज-5 के तहत प्रस्तावित कॉरिडोर पर काम शुरू करने के संबंध में बीते दिनों डीएमआरसी की तरफ से आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय को पत्र भी लिखा गया था। इसमें कहा गया है कि फेज-5 को दो भागों में विभाजित किया गया है। फेज-5(ए) में उन कॉरिडोर को शामिल किया गया है जिनकी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार हो चुकी है, जबकि फेज 5(बी) में प्रस्तावित कॉरिडोर की डीपीआर आदि पर अभी काम नहीं हुआ है। फेज-5 में कुल 18 कॉरिडोर और 128 स्टेशन बनाने की योजना है। इनके बनने से मेट्रो नेटवर्क का लगभग 500 किलोमीटर तक का विस्तार हो जाएगा। प्रस्तावित कॉरिडोर दिल्ली और पड़ोसी राज्यों के बीच कनेक्टिविटी मजबूत करेंगे। दिल्ली मेट्रो के फेज-4 के सभी छह कॉरिडोर को हरी झंडी मिल चुकी है। इसमें से तीन कॉरिडोर पर निर्माण कार्य चल रहा है, जबकि तीन अन्य कॉरिडोर पर इस साल निर्माण कार्य शुरू होगा। वर्तमान में जनकपुरी वेस्ट से रामकृष्ण आश्रम मार्ग, मजलिस पार्क से मौजपुर और तुगलकाबाद से दिल्ली एयरोसिटी के बीच बन रहे फेज-4 के तीन कॉरिडोर पर काम तेजी से चल रहा है। इन तीनों कॉरिडोर पर अब तक 60 फीसदी से अधिक काम पूरा हो गया है। लाजपत नगर से साकेत जी-ब्लॉक और इंद्रप्रस्थ से इंद्रलोक के बीच बनने वाले दो कॉरिडोर की टेंडर प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जबकि रिठाला से कुंडली के बीच बनने वाले कॉरिडोर की प्री-टेंडरिंग प्रक्रिया चल रही है। सभी छह कॉरिडोर को मिलाकर फेज-4 की लंबाई 112.42 किमी है। फेज-5(ए) के तीन कॉरिडोर इंद्रप्रस्थ से आरके आश्रम, एयरोसिटी से टर्मिनल-1 और तुगलकाबाद से कालिंदी कुंज कॉरिडोर पर जल्द काम शुरू हो सकता है। इन तीनों कॉरिडोर की डीपीआर पहले ही तैयार कर ली गई है। ऐसे में बताया जा रहा है कि इन कॉरिडोर पर काम शुरू करने की मंजूरी जल्द ही मिलेगी। अन्य कॉरिडोर के लिए डीपीआर तैयार करने के साथ ही अन्य जरूरी सर्वे आदि कराया जाएगा।

शेयर बाजार में निवेश पर मुनाफे का झांसा देकर महिला से 17.42 लाख ठगे

ग्रुप में जोड़कर दिया वारदात को अंजाम, साइबर क्राइम थाना सेंट्रल में एफआईआर दर्ज

फरीदाबाद। शेयर बाजार में निवेश पर मुनाफे का झांसा देकर एक महिला से 17.42 लाख रुपये ठग लिए गए। महिला का कहना है कि ऑनलाइन सर्च करते हुए उन्हें लिंक मिला तो ग्रुप में जोड़कर निवेश कराने लगे। 19.47 लाख रुपये जमा करने के बाद महिला को 2.05 लाख रुपये रिफंड भी किए गए। लेकिन बाकी रुपये नहीं मिले। पुलिस प्रवक्ता यशपाल सिंह ने बताया कि साइबर क्राइम थाना सेंट्रल में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की गई है। ठगी को लेकर पुलिस को ये शिकायत सेक्टर-19 एरिया की रहने वाली महिला ने दी है। महिला का कहना है कि 4 दिसंबर 2021 को वो ऑनलाइन शेयर बाजार में निवेश को लेकर सर्च कर रही थी। इसी दौरान मिले एक लिंक पर क्लिक किया तो कुछ देर बाद ही इनके नंबर पर व्हाट्सएप मैसेज आया। जिसमें एक ग्रुप को जॉइन करने के बारे में लिखा था। कहा गया कि इस ग्रुप में शेयर बाजार की जानकारी मिलेगी। महिला ने ग्रुप जॉइन कर लिया। आरोप है कि वहां टीना मेहता नामक युवती व्हाट्सएप मैसेज कर शेयर बाजार में निवेश कराने लगी। युवती के कहे अनुसार महिला ने 19 दिसंबर 2024 से 6 जनवरी 2025 तक अपने एचडीएफसी बैंक खाते से 19 लाख 47 हजार रुपये निवेश कर दिए। महिला का कहना है कि 2 लाख 5 हजार रुपये उन्हें वापस भी मिले। लेकिन बाकी रुपये रिफंड नहीं करने दिए गए। इस तरह महिला से 17.42 लाख रुपये ठग लिए गए। साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराई गई। वहां से मामला फरीदाबाद पुलिस के पास पहुंचा। जिस पर अब साइबर क्राइम थाना सेंट्रल में एफआईआर दर्ज की गई है।

सार-समाचार

पुलिस निशानेबाजी में ग्रेनो की सीमा ने जीते तीन पदक

ग्रेटर नोएडा (संवाद)। जिले की निशानेबाज सीमा यादव ने मध्य प्रदेश में हुई पांच दिवसीय अखिल भारतीय पुलिस निशानेबाजी चैंपियनशिप में स्वर्ण और दो रजत पदक जीते हैं। प्रतियोगिता में कई राज्यों के 600 से अधिक निशानेबाजों ने भाग लिया। ग्रेटर नोएडा की पैरामाउंट गोल्फ फोरेस्टे सोसाइटी निवासी सीमा ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल (आईटीबीपी) का प्रतिनिधित्व किया। सीमा ने 300 मीटर राइफल शूटिंग के तीन इवेंट में दो रजत पदक और प्रोन स्पर्धा में एक स्वर्ण पदक हासिल किया। निशानेबाज के पदक जीतने पर परिवार में खुशी का माहौल है। सीमा के पति हरिओम यादव ने बताया कि अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड (एआईपीएससीबी) की ओर से मध्य प्रदेश के इंदौर में 25 से 29 मार्च तक यह चैंपियनशिप कराई गई। चैंपियनशिप में असम, हरियाणा, केरला, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, पंजाब पुलिस, तेलंगाना समेत कई राज्यों की पुलिस के निशानेबाजों ने हिस्सा लिया। साथ ही रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ), सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), असम राइफल्स (एआर), केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ), सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के निशानेबाजों ने भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

मुख्यमंत्री ने कालकाजी में वॉल आर्ट का किया शुभारंभ

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी के क्षेत्र कालकाजी में वॉल आर्ट का उद्घाटन किया। इस दौरान आतिशी मौजूद नहीं रहीं, जबकि आप नेताओं व कार्यकर्ताओं ने रास्ते में मुख्यमंत्री को काले झंडे दिखाए। कार्यक्रम में सांसद रामवीर सिंह विधुडी और स्थानीय पार्षद योगिता सिंह ने शिरकत की। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सीएसआर फंड से कालकाजी में दो पार्कों का विकास और झुग्गी वालों के लिए तीन वाटर एटीएम प्लांट भी लगाए जाएंगे। इसके अलावा कालकाजी में 150 सोलर लाइट भी लगेंगी। दिल्ली को स्वच्छ, सुंदर और विकसित बनाने के हमारे संकल्प के तहत यह महत्वपूर्ण पहल है। वॉल आर्ट न केवल एक सौंदर्यात्मक आकर्षण जोड़ती है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों को भी प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने का माध्यम बनती है। कालकाजी में विकास योजनाएं जनकल्याण और सतत शहरी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। ये परियोजनाएं न केवल कालकाजी क्षेत्र के सौंदर्यीकरण में योगदान देंगी, बल्कि सामुदायिक विकास को भी बढ़ावा देंगी। दिल्ली सरकार भविष्य में भी ऐसी पहल को प्रोत्साहित करती रहेगी, ताकि राजधानी और अधिक स्वच्छ, सुरक्षित व सुंदर बन सके। इधर, आप नेताओं व कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री के खिलाफ प्रदर्शन किया। उन्होंने रास्ते में सीएम को काले झंडे दिखाकर नारेबाजी की। उनका कहना था कि भाजपा ने महिला समृद्धि योजना के तहत महिलाओं को प्रति माह 2500 रुपये देने का वादा किया गया था, लेकिन अब तक राशि नहीं मिली है।

सड़क हादसे में दो युवकों की मौत और दो हुए घायल

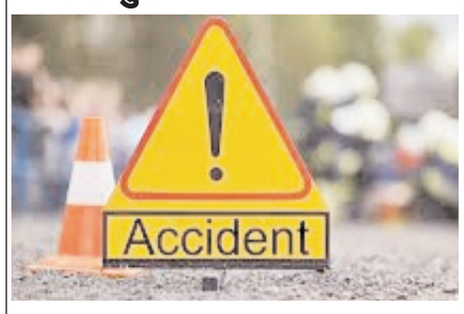

नई दिल्ली। दिल्ली के नारायणा इलाके में शनिवार देर रात एक तेज रफ्तार सियाज कार पेड़ से टकरा गई। हादसे में कार में सवार दो युवकों की मौत हो गई, जबकि अन्य दो घायल हो गए। घायलों का निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। मृतकों की शिनाख्त हरिनगर निवासी 22 साल के लक्षित और 21 साल के यश वर्मा के रूप में हुई है। वहीं 22 साल के यश गुप्ता और 23 साल के हिमांशु का इलाज चल रहा है। जानकारी के अनुसार, घायल अभी बयान देने की हालत में नहीं है। पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि चारों दोस्त थे और रात में सभी घूमने के लिए गए थे। वहां से वापस आने के दौरान नारायणा के पास हादसा हो गया। लक्षित पारिवारिक व्यवसाय करते थे, वहीं यश वर्मा के परिवार का स्टील का कारोबार है। जिसमें वह पिता का हाथ बंटाते थे। यश गुप्ता कपड़े की फैकटरी में काम करता है।

युवक से मारपीट कर लूट लिये 54 हजार रुपये और सोने की चेन

फरीदाबाद। बाइक पर सवार होकर अपने दोस्तों के साथ वृंदावन घूमने जा रहे युवक के साथ मारपीट की गई। मारपीट कर व्यक्ति से आरोपी 52 हजार रुपये और सोने की चेन लूट कर ले गए। पुलिस प्रवक्ता यशपाल सिंह ने बताया कि थाना सिटी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। न्यू बसेलवा कॉलोनी निवासी अर्जुन साहू ने बताया कि 23 मार्च को अपने घर पर थे। तभी उन्होंने अपने दोस्त साहिल और नितिन के साथ वृंदावन घूमने का प्लान बनाया। उनके दोनों दोस्त रास्ते में मिल गए। सभी बाइक पर सवार होकर बल्लभगढ़ आए। वे किसी दुकानदार को देने के लिए घर से 52 हजार रुपये लेकर आए थे। सोहना टी प्वाइंट के पास शराब ठेके की खाली पडी जगह पर उन्होंने अपनी बाइक को रोक दिया। साहिल बाइक को खडी करने चला गया। वहीं दूसरा दोस्त नितिन सिगरेट लेने चला गया। आरोप है कि तभी वहां पर दो स्कॉर्पियो आई। जिसमें से करीब 15 लड़के उतरे। उनमें से 8 लड़कों को वह जानते थे। आरोपी अजित भाटी ने उनके पीछे आते ही पिस्तौल लगा दी और कहा कि गाड़ी के अंदर बैठे। उन्होंने बैठने से मना किया तो आरोपी सौरभ बिधूड़ी निवासी गड्डा कॉलोनी, अजय भाटी निवासी गड्डा कालोनी, सुनील व अमित निवासी गांव सिडौला, मयंक नागर निवासी खेड़ी पुल ने उनके ऊपर रॉड और लाठी डंडों से हमला कर दिया। इस हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। आरोपी इस दौरान उनकी जेब में रखे 52 हजार रुपये और सोने की चेन लूट कर भाग गए। दोस्त उनको उपचार के लिए बीके अस्पताल लेकर आए जहां से डॉक्टर ने हालत गंभीर होने के चलते दिल्ली रेफर कर दिया।

दिल्ली नगर पालिका परिषद ने अपनाई नई तकनीक

वायु प्रदूषण रोकने के लिए लोधी रोड पर लगाए मिस्ट स्प्रे

नई दिल्ली। राजधानी में वायु प्रदूषण की समस्या को कम करने के लिए नई दिल्ली नगर पालिका परिषद (एनडीएमसी) ने नई तकनीक अपनाई है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत लोधी रोड पर बिजली के खंभों पर मिस्ट स्प्रे लगाए गए हैं। इस तकनीक का उपयोग दिल्ली में पहली बार किया गया है, जिसका उद्देश्य हवा में मौजूद धूल और प्रदूषित कणों को नियंत्रित करना है। एनडीएमसी ने दो महीने पहले बजट में इस योजना की घोषणा की थी। एनडीएमसी के अनुसार, योजना के तहत बिजली के खंभों पर ऐसे विशेष उपकरण लगाए गए हैं, जो समय-समय पर साफ जल की फुहारें छोड़ते हैं। यह मिस्ट स्प्रे हवा में मौजूद धूल और प्रदूषित कणों को जमीन पर बैठाने में मदद करता है, जिससे प्रदूषण स्तर कम होता है। यह तकनीक उन इलाकों में अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां प्रदूषण का स्तर अधिक होता है और सड़क किनारे धूल जमा होती है। इस पहल से वायु गुणवत्ता में सुधार की उम्मीद की जा रही है। यदि यह पायलट प्रोजेक्ट सफल रहेगा, तो इसे अन्य इलाकों में भी लागू किया जा सकता है। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की तकनीक वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए एक प्रभावी कदम हो सकती है। हालांकि, उनका कहना है कि इस तकनीक के दीर्घकालिक प्रभावों का मूल्यांकन जरूरी होगा। विशेषज्ञों का सुझाव है कि मिस्ट स्प्रे के साथ-साथ हरित क्षेत्रों का विस्तार, निर्माण स्थलों पर कड़े नियम और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने जैसे कदम भी उठाए जाने चाहिए। एनडीएमसी वायु प्रदूषण कम करने के लिए अन्य उपाय भी अपना रही है। धूल और प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए स्मॉग गन का उपयोग किया जा रहा है, जिससे हवा में मौजूद सूक्ष्म कणों को नीचे बैठाया जाता है। साथ ही, सड़कों और निर्माण स्थलों पर नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाता है। दिल्ली में हर साल सर्दियों में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार नए-नए उपाय अपना रही हैं। मिस्ट स्प्रे तकनीक को इसी दिशा में एक नए प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि यह तकनीक कितनी प्रभावी साबित होती है और कितने बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता है।

दिल्ली की मस्जिदों में अदा की गई नमाज

एक-दूसरे के मिले गले, बच्चों ने मांगी दुआ

नई दिल्ली। रमजान के पाक महीने के खत्म होने के साथ ही सोमवार को देशभर में ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया गया। देश की सबसे बड़ी मस्जिद दिल्ली की जामा मस्जिद में ईद उल फितर की नमाज पढ़ी गई है। दिल्ली की जामा मस्जिद के बाद ईद-उल-फितर के मौके पर लोगों ने फतेहपुरी मस्जिद में नमाज अदा की। इस मौके पर यहां भारी संख्या में लोग पहुंचे। वहीं सुरक्षा के पुख्ता इंजाम भी रहे। मस्जिदों के बाहर दिल्ली पुलिस और सुरक्षाबलों के जवान मौजूद रहे। इस मौके पर जामा मस्जिद पर भारी संख्या में लोग मस्जिद प्रांगण में जमा हुए। इस मौके पर बच्चों में खासा उत्साह देखा। जामा मस्जिद के बाहर और आसपास के इलाके में सुबह से भारी पुलिस बल तैनात है। रमजान के मुबारक महीने के खत्म होने के बाद ईद का पर्व मनाया आया। ईद सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि यह इंसानियत, भाईचारे और प्रेम का जश्न है। इस मौके पर गुरुग्राम के लेजर वैली ग्राउंड में ईद पर नमाज पढ़ते मुस्लिम समुदाय के लोग नजर आए। सोमवार को देशभर में ईद मनाई गई। ईद के चांद का दीदार होने के साथ रमजान का पवित्र महीना पूरा हो गया है। मुस्लिम धर्म में रमजान के महीना का विशेष महत्व होता है। इस पाक महीने में लगातार करीब 30 दिनों तक खुदा की इबादत और रोजे रखे जाते हैं। ईद के चांद के दिखाई देने के साथ अगले दिन ईद-उल-फितर मनाई जाती है।

छात्र की हत्या मामले में मुख्य आरोपी सहित दो हुए गिरफ्तार

बल्लभगढ़। अपराध शाखा सेंट्रल की टीम ने रितेश हत्याकांड में दो और आरोपी हिमांशु व उज्ज्वल को गिरफ्तार किया है। 27 मार्च को अग्रवाल कॉलेज के छात्र रितेश कुमार की चाकू मारकर हत्या कर दी गई थी, जिस संबंध में मृतक के पिता संतोष कुमार निवासी गर्ग कॉलोनी पार्ट 2 की शिकायत पर थाना शहर में हत्या की धारा के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया था। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि अपराध शाखा सेंट्रल की टीम ने नामजद आरोपी हिमांशु व उसके साथी उज्ज्वल को गिरफ्तार किया है। हिमांशु, आर्य नगर, सेक्टर 2 फरीदाबाद का रहने वाला है और अग्रवाल कॉलेज में बीसीए द्वितीय वर्ष का छात्र है। वहीं दूसरा आरोपी उज्ज्वल आजाद नगर का रहने वाला है और आरोपियों का दोस्त है। हिमांशु ने पूछताछ में बताया कि निशांत निवासी झाड़सेंतली अग्रवाल कॉलेज में ही पढ़ाई करता है। 26 मार्च को किसी बात को लेकर निशांत से फोन पर आरोपी से गाली गलौज हुई थी। जिस पर आरोपी ने उसको अगले दिन देखने के लिए कहा था। फिर 27 मार्च को आरोपी अपने साथी बल्लू, सचिन, पंकज, उज्ज्वल आदि को साथ लेकर निशांत व उनके साथियों के साथ मार्केट में झगड़ा कर रहे थे। तभी रितेश, निशांत की तरफ से झगड़े में बीच बचाव करने के लिए आ गया। झगड़े के दौरान रितेश को चाकू लग गया और उसकी मृत्यु हो गई। वहीं उज्ज्वल ने बताया कि दोस्तों ने फोन कर उसको बुलाया था। जिस पर वह डंडा लेकर झगड़े के लिए गया था। दोनों आरोपियों को अदालत में पेश कर 3 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। वहीं मामले में आरोपी बल्लू उर्फ कौशलेंद्र, पंकज व सचिन को 28 मार्च को गिरफ्तार किया जा चुका है। जिनको 4 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया हुआ है।

सोसाइटी के फ्लैट से मांस की हो रही है सप्लाई

मेवात क्षेत्र से सोसाइटी में लेकर गुरुग्राम में बेचा जाता था मांस

गुरुग्राम। गांव धुनेला स्थित ग्लोबल हाइट्स सोसाइटी के एक फ्लैट से दंपती द्वारा मांस की सप्लाई करने का मामला सामने आया है। रविवार की सुबह सोसाइटी गेट पर सुरक्षा जांच के दौरान दो डिलीवरी ब्वॉय द्वारा मांस की सप्लाई करते हुए पकड़े जाने की सूचना मिलने पर गोरक्षा दल के सदस्य सोसाइटी पहुंचे और हंगामा किया। जांच में सामने आया कि फ्लैट में रहने वाले पति-पत्नी नूंह के रोजकामेव से मांस लाकर अपने फ्लैट में रखते थे और डिलीवरी ब्वॉय के जरिए गुरुग्राम के अलग-अलग क्षेत्रों में यह मांस सप्लाई किया जाता था। भोंडसी थाना पुलिस ने मांस जब्त करके लैब भेज दिया है। रिपोर्ट आने पर पता चलेगा कि मांस किस पशु का है। ग्लोबल हाइट्स सोसाइटी के मुख्य सुरक्षा अधिकारी गौरव और गोरक्षा दल के सदस्य आदेश खटाना ने भोंडसी थाना में मामले में शिकायत दी है। रविवार की सुबह लगभग पांच बजे स्वीगी कंपनी की जैकेट व टी-शर्ट पहने दो डिलीवरी ब्वॉय सोसाइटी में आए। जब यह जाने लगे तो संदेह होने पर निकलने वाले गेट पर दोनों को रोका गया। सुरक्षा अधिकारी सतवीर, भरत व सिकंदर ने बाइकों पर पीछे रखे बैगों की जांच की गई तो इसमें मांस के दो कट्टे मिले। दोनों कट्टों में 20-20 किलो तक मांस था। डिलीवरी ब्वॉय से मांस की सप्लाई के बारे में जानकारी ली गई तो पता चला कि सोसाइटी के टावर नंबर-5 के फ्लैट नंबर-5804 से कट्टे लेकर जा रहे थे। इसकी सूचना पुलिस और काउ टास्क फोर्स को दी। पुलिस टीम और काउ टास्क फोर्स की टीम मौके पर पहुंची और एक डाक्टर को भी बुलाया गया। सोसाइटी में गोमांस की सप्लाई की जानकारी मिलने पर गोरक्षा दल के सदस्य भी मौके पर पहुंच गए।

संपादकीय

देश के विकास का सशक्त आधार है शिक्षा

शिक्षा किसी भी देश के समग्र एवं सर्वांगीण विकास का सशक्त आधार है। जब 1 अप्रैल, 2010 को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आरटीई अधिनियम) लागू हुआ, तो यह केवल एक कानून का जन्म नहीं था—यह भारत के हर बच्चे के लिए एक सुनहरे भविष्य का वादा था। यह एक ऐसी क्रांति की शुरुआत थी, जिसने शिक्षा को विशेषाधिकार की बेड़ियों से मुक्त कर इसे हर बच्चे का अधिकार बना दिया। पिछले 15 वर्षों में इस अधिनियम ने भारतीय शिक्षा के कैनवास पर ऐसी अमिट रेखाएँ खींचीं, जो सपनों को हकीकत में बदलने की उम्मीद जगाती हैं। सरकार ने गरीबी की अंधेरी गलियों में भटकते लाखों बच्चों को स्कूल का रास्ता दिखाया, अनगिनत योजनाओं के जरिए उनके कदमों को कक्षा तक पहुँचाया। सरकारी और निजी स्कूलों में 25 प्रतिशत आरक्षण की नीति ने सामाजिक असमानता को तोड़ने का साहसिक कदम उठाया। इसका परिणाम साफ दिखा—प्राथमिक शिक्षा में नामांकन की बाढ़ आई, स्कूल छोड़ने की दर में कमी आई। यह बदलाव केवल आँकड़ों का खेल नहीं था, बल्कि उन मासूम आँखों में चमक थी, जो पहले स्कूल की चौखट को दूर से निहारती थीं। हालाँकि, यह राह सपनों जितनी रंगीन नहीं थी। ग्रामीण भारत में कई स्कूल आज भी उम्मीदों से कोसों दूर हैं—टपकती छतें, बिना बेंच की कक्षाएँ, और शिक्षकों की अनुपस्थिति ने इस क्रांति की रफ्तार को बार-बार रोका। शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठे, जिसके जवाब में सरकार को अपनी नीतियों को बार-बार तराशना पड़ा। शिक्षकों की भर्ती के लिए बड़े अभियान छेड़े गए, उनके प्रशिक्षण को नया आयाम दिया गया, ताकि कक्षा में पढ़ाई शब्दों का शोर न रहकर बच्चों के सपनों को उड़ान देने वाला प्रकाश बने। मगर संसाधनों की कमी और जमीनी हकीकत से दूरी ने इन कोशिशों पर बार-बार पानी फेरा। बिजली का अभाव, पानी की किल्लत, और किताबों-कॉपियों की कमी ने इस क्रांति को अधूरी कविता-सा बना दिया। सरकार की मंशा और बच्चों की उम्मीदों के बीच एक गहरी खाई बनती गई। फिर भी, माँ-बाप ने हार नहीं मानी। अपने बच्चों को स्कूल भेजा—पैरों में चप्पल न सही, मगर सपनों में उड़ान की चाह जरूर थी। लेकिन उनके मन में एक सवाल बार-बार कुलबुलाता रहा—क्या यह शिक्षा, जो टूटे स्कूलों और अधूरी व्यवस्थाओं के बीच पल रही है, उनके बच्चों की जिंदगी को सचमुच बदल पाएगी? क्या ये जर्जर दीवारें और खामोश कक्षाएँ उनके नौनिहालों के भविष्य को संवार सकेंगी? यह सवाल उनकी पुकार ही नहीं, बल्कि उस क्रांति की सच्चाई का आईना था, जो हर बच्चे को रोशनी देने का सपना लिए चल रही थी, पर हर कदम पर बाधाओं से जूझ रही थी। यह एक ऐसी कहानी थी, जिसमें कोशिशें थीं, जज्बा था, मगर मंजिल तक पहुँचने के लिए अभी लंबा रास्ता बाकी था। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा का सर्वव्यापीकरण सिर्फ स्लोगनों तक ही सीमित न रहे बल्कि इसके लिये व्यापक स्तर पर प्रयास किये जायें।

शक्ति, समय और संकल्प: नवरात्रि से संवत्सर तक की आध्यात्मिक यात्रा

नजरिया

माता दुर्गा की भक्ति का उत्सव और समय का नया चक्र एक साथ शुरू हो रहे हैं, मानो प्रकृति और परमात्मा मिलकर हमें एक महान संदेश दे रहे हों। हिंदू संस्कृति में संवत्सर कोई साधारण तिथि परिवर्तन नहीं, बल्कि समय की एक जीवंत कथा है। यह एक चक्र का समापन और दूसरे का प्रारंभ है, एक ऐसा कालखंड जो अपने नाम और स्वभाव से आने वाले दिनों की दिशा रचता है। इस बार का संवत्सर है कालयुक्त—एक ऐसा नाम जो सुनते ही मन में गहरे अर्थों की लहरें उठाता है, जैसे कोई प्राचीन मंत्र जो शक्ति और रहस्य से ओतप्रोत हो। काल वह शक्ति है जो समय को थामती है, परिवर्तन को जन्म देती है, और न्याय का पहिया घुमाती है। युक्त वह बंधन है जो सबको एक सूत्र में पिरोता है। कालयुक्त संवत्सर यानी वह समय, जो परिवर्तन और न्याय का एक स्वर्णिम संगम बनकर हमारे सामने खड़ा है। यह वर्ष हमें पुकारता है—समय के साथ कदम मिलाओ, कर्म को अपना आधार बनाओ, वरना यह चक्र तुम्हें पीछे छोड़ देगा। इस संवत्सर का प्रभाव ऐसा है, मानो कोई जादुई रंग जीवन के कैनवास पर बिखर रहा हो। ज्योतिष की दृष्टि से यह वर्ष उथल-पुथल और शांति का एक अनोखा मिश्रण है।

प्रो. आरके जैन

जब सुबह की पहली किरण धरती को चूमती है, तो मानो स्वर्णिम आलिंगन में सृष्टि को बाँध लेती है। नव अंकुर मिट्टी को चीरकर जीवन की आहट सुनाते हैं, हवा में पत्तों की सरसराहट एक मधुर राग बनकर गूंजती है, और चारों ओर मंगल ध्वनियाँ एक पवित्र संगीत की तरह फैलने लगती हैं। यह वह क्षण है जब प्रकृति अपने पूरे वैभव के साथ नए समय का अभिनंदन करती है—एक ऐसी शुरुआत जो हृदय को आनंद और शक्ति से भर देती है। इस बार यह पल और भी अनुपम है, क्योंकि नवरात्रि की पावन घड़ी कालयुक्त नामक नव संवत्सर के साथ एक मधुर स्वर-लहरी में गूंज उठी है। यह संयोग मन को रोमांच से भर देता है—शक्ति और समय का एक अलौकिक मिलन, एक ऐसा नृत्य जो सृष्टि को नए रंगों से सजाने को तैयार है। माता दुर्गा की भक्ति का उत्सव और समय का नया चक्र एक साथ शुरू हो रहे हैं, मानो प्रकृति और परमात्मा मिलकर हमें एक महान संदेश दे रहे हों। हिंदू संस्कृति में संवत्सर कोई साधारण तिथि परिवर्तन नहीं, बल्कि समय की एक जीवंत कथा है। यह एक चक्र का समापन और दूसरे का प्रारंभ है, एक ऐसा कालखंड जो अपने नाम और स्वभाव से आने वाले दिनों की दिशा रचता है। इस बार का संवत्सर है कालयुक्त—एक ऐसा नाम जो सुनते ही मन में गहरे अर्थों की लहरें उठाता है, जैसे कोई प्राचीन मंत्र जो शक्ति और रहस्य से ओतप्रोत हो। काल वह शक्ति है जो समय को थामती है, परिवर्तन को जन्म देती है, और न्याय का पहिया घुमाती है। युक्त वह बंधन है जो सबको एक सूत्र में पिरोता है। कालयुक्त संवत्सर यानी वह समय, जो परिवर्तन और न्याय का एक स्वर्णिम संगम बनकर हमारे सामने खड़ा है। यह वर्ष हमें पुकारता है—समय के साथ कदम मिलाओ, कर्म को अपना आधार बनाओ, वरना यह चक्र तुम्हें पीछे छोड़ देगा। इस संवत्सर का प्रभाव ऐसा है, मानो कोई जादुई रंग जीवन के कैनवास पर बिखर रहा हो। ज्योतिष की दृष्टि से यह वर्ष उथल-पुथल और शांति का एक अनोखा मिश्रण है। समाज में नई हलचल होगी—पुरानी व्यवस्थाएँ धराशायी होंगी, नई नींवें मजबूत होंगी। शासन के गलियारों में नए चेहरे और समीकरण

उभरकर चमकेंगे, धन-व्यवस्था की नाव ऊँची लहरों पर नृत्य करेगी। प्रकृति भी इस नाटक में अपनी भूमिका निभाएगी—कहीं वर्षा की मधुर झंकार गूंजेगी, कहीं सूखे की सन्नाटी छाएगी, तो कहीं हवा का तेज शोर सुनाई देगा। लेकिन इन सबके बीच एक सुनहरा प्रकाश चमकेगा—आस्था का तेज। लोग धर्म की ओर लौटेंगे, संस्कृति को हृदय से लगाएँगे। कालयुक्त संवत्सर एक गूंजती पुकार है—समय को पहचानो, परिश्रम को पूजो, और परिवर्तन को गले लगाओ। जो ऐसा करेगा, उसके लिए यह वर्ष अनमोल उपहारों का भंडार लेकर आएगा।

नवरात्रि का आगमन अपने आप में एक महोत्सव है—शक्ति का उन्माद, भक्ति का रंग, और साधना का प्रकाश। नौ रातें, जब हर घर माता दुर्गा की आराधना से मंदिर बन जाता है, और हर प्राण में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। यह वह समय है जब हम अपनी भीतरी शक्ति को जगाते हैं, अपने भीतर के राक्षसों से युद्ध करते हैं। और जब यह पावन पर्व कालयुक्त संवत्सर के साथ शुरू होता है, तो यह क्षण और भी चमकदार हो उठता है। यह ऐसा है जैसे माता दुर्गा समय के स्वर्णिम रथ पर सवार होकर हमें आशीर्वाद देने उतरी हों। जैसे उन्होंने महिषासुर को परास्त किया, वैसे ही यह समय हमें अपने अज्ञान, आलस्य और अहंकार को कुचलने की शक्ति देता है। यह संयोग एक शंखनाद है—नया समय आ गया है, नई शुरुआत का क्षण है। यह संवत्सर और नवरात्रि का संगम हर स्तर पर बदलाव का वादा करता है। व्यक्तिगत जीवन में यह हमें अपने लक्ष्यों को नए सिरे से गढ़ने का अवसर देता है। समाज में यह जागृति की लहर लाएगा, और राष्ट्र के लिए यह प्रगति का एक नया अध्याय रचेगा। 30 मार्च 2025 को शुरू होने वाली यह यात्रा कोई साधारण तिथि नहीं, बल्कि एक नई सुबह का स्वर्णिम आलोक है। इस दिन शुरू होने वाला हर कार्य सफलता की सुगंध से महकेगा, बशर्ते हम इसे पूरे मन से अपनाएँ। यह समय हमें पुकारता है—अपने स्वप्नों को पंख दो, अपने संकल्प को अटल करो, और इस नए चक्र के साथ कदम मिलाओ। ज्योतिषी बताते हैं कि कालयुक्त संवत्सर में धर्म का झंडा ऊँचा लहराएगा। शासन नई नीतियाँ लाएगा, जो समाज को नई राह दिखाएगा। धन के क्षेत्र में उत्साह और चुनौतियाँ साथ-साथ दौड़ेंगी। प्रकृति का स्वभाव भी बदलता रहेगा—कभी कोमल वर्षा की झंकार, कभी उग्र तूफानों का शोर। लेकिन इस सबका मूल मंत्र एक ही है—समय। जो समय को समझेगा, संयम से चलेगा, और कर्म को गले लगाएगा, उसके लिए यह वर्ष एक चमकदार कृति बन जाएगा। यह संवत्सर हमें सिखाता है कि जीवन का हर पल अनमोल है, और इसे व्यर्थ गँवाना सबसे बड़ा अपराध। यह शुभ संगम हमें कुछ अनमोल सबक देता है। यह कहता है—परिवर्तन से भय मत करो, उसे अपना सहचर बनाओ। समय को अपना गुरु मानो, क्योंकि वही तुम्हें मार्ग दिखाता है। कर्म को अपना धर्म बनाओ, क्योंकि वही तुम्हारा भाग्य रचता है। और सबसे बड़ी बात—संस्कृति और मानवता के पथ पर चलो, क्योंकि यही जीवन का सच्चा आधार है। यह समय संकल्प का है—संकल्प कि हम अपने भीतर के राक्षसों को हराएँगे, समाज को बेहतर बनाने में योगदान देंगे, और समय के साथ तालमेल बिठाएँगे। यदि हम ऐसा कर पाए, तो यह वर्ष हमारे लिए केवल एक संवत्सर नहीं, बल्कि एक नई रोशनी का प्रतीक बन जाएगा। सुनहरे क्षणों का आलम सज गया है, जब नवरात्रि की पावन घड़ियाँ और कालयुक्त संवत्सर का शुभारंभ एक साथ गूंज उठे हैं। माता दुर्गा के चरणों में शीश झुकाएँ, उनकी असीम शक्ति से अपने हृदय को आलोकित करें, और इस नए समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल पड़ें। यह संयोग हमारे लिए सुख, समृद्धि, और सफलता का एक स्वर्णिम द्वार खोलने को तैयार है। यह वह पल है जब हम अपने स्वप्नों को साकार करने का संकल्प लें, अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँ, और इस चक्र को एक अविस्मरणीय गाथा बनाएँ। यह कालयुक्त संवत्सर और नवरात्रि का संदेश है—शक्ति और समय का यह नृत्य हमें एक नई आलोकित राह पर ले जाए। इस यात्रा को गले लगाएँ, इसे जीएँ, और इसे अमर बनाएँ।

विकास के साथ सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण जरूरी

सुरेश सेठ

भारत एक बड़ा प्रजातंत्र है, जिसका संविधान धर्मनिरपेक्षता की शर्त के तहत वादा करता है कि यहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाएगा और कट्टरवाद को त्यागा जाएगा। इसका उद्देश्य यह है कि लोग विभाजित होकर एक-दूसरे में वैमनस्य न फैलाएं। गंगा-जमुना संस्कृति का आदान-प्रदान केवल स्थान विशेष तक सीमित न रहे, बल्कि पूरे देश में लोगों को अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर एकता के सिद्धांत पर आधारित विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। सरकार ने भारत को एकजुट और सशक्त बनाने के लिए कई प्रयास किए हैं। सबसे पहले, जीएसटी के रूप में 'एक देश, एक कर' की व्यवस्था लागू की गई। इसके बाद, 'एक देश, एक चुनाव' का प्रस्ताव और एकीकृत सिविल कोड की स्थापना पर चर्चा की जा रही है। हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया गया था, क्योंकि देश की अधिकांश आबादी इसे समझती है। हालांकि, दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु में इस पर विरोध है, जिससे हिंदी को वह दर्जा नहीं मिल सका जो अपेक्षित था। अगर हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें अपनी भाषा हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाना चाहिए और इस रास्ते में किसी भी प्रकार के कटुता, सांप्रदायिकता या क्षेत्रीयवाद के अवरोध नहीं आने चाहिए। हमें अखंड भारत बनाने के लिए और भी बहुत से कदम उठाने होंगे।

अनुच्छेद 370 और 35-ए के उन्मूलन ने जम्मू-कश्मीर को शेष भारत से जोड़ा, जिससे वहां पर्यटन, तीर्थाटन और फिल्मों की शूटिंग फिर से शुरू हुई। यह भारत की एकता का प्रतीक है। हाल ही में बिहार दिवस को सार्वदेशिक रूप से मनाने की घोषणा की गई है, ताकि यह केवल बिहार तक सीमित न रहे, बल्कि पूरा देश इसे मनाए। बिहार की सांस्कृतिक धरोहर, जिसमें माता सीता, महात्मा बुद्ध, महावीर जैन, गुरु गोबिंद सिंह और आर्यभट्ट की जन्मभूमि की गरिमा भी शामिल हैं, को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में स्वीकार किया गया। यह क्षेत्रीयता की सीमाओं से परे जाकर भारतीय संस्कृति की एकता को बढ़ावा देने का कदम है। सरकार ने 'एक देश, एक उत्सव' और 'एक देश, एक राशन कार्ड' जैसे कदम उठाए हैं, जो राष्ट्रीय एकता और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। एक राशन कार्ड से देशभर में राशन प्राप्त करने की सुविधा से एक राज्य के लोग अन्य राज्यों में भी सस्ता राशन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उन्हें रोजगार के नए अवसर मिलते हैं। इसके साथ ही, कई राज्यों में रहने वाले लोग मतदान में भाग नहीं ले पाते क्योंकि वे रोजगार की तलाश में दूर जाते हैं। एक उदाहरण के रूप में स्थिति यह है कि बिहार में रह रहे मूल लोगों के कुल वोटों का 45 प्रतिशत ही मतदान कर पाता है। इस तरह कम मतदान प्रतिशत के कारण एक मजबूत लोकतंत्र का निर्माण नहीं हो रहा। वहीं 'एक देश, एक उत्सव' के विचार से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि हर राज्य का सांस्कृतिक महोत्सव पूरे देश में मनाया जाए, जिससे देश को सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्र में बांधने में मदद मिलेगी। सत्तारूढ़ राजनेताओं का यह दावा कि एनडीए सरकार के तहत भारत एकीकृत और अखंड हुआ है, सच में कई विकासात्मक कदम उठाए गए हैं। बिहार जैसे पिछड़े राज्यों में प्राथमिकता के आधार पर विकास हुआ है, जैसे नए अस्पताल, इंजीनियरिंग और पॉलीटेक्निक कॉलेजों की संख्या में वृद्धि, और एयरपोर्टों की संख्या में इजाफा। हालांकि, यह सवाल उठता है कि इस समावेशी विकास के साथ हम भारत को एकता के सूत्र में कैसे बांध सकते हैं? जाति आधारित आरक्षण, जो जनगणना से जुड़े विवादों का मुख्य मुद्दा है, आज भी देश में एक बड़ी चुनौती है। देश के कई राज्यों में जातीय संघर्ष दुर्भाग्यपूर्ण है। जैसे मणिपुर में जातीय संघर्षों की स्थिति है। यह मैतेई और कुकी जाति का मसला ही नहीं बल्कि वहां छोटी-छोटी जनजातियां भी अपने लिए आरक्षण मांग रही हैं। इसके अलावा, उदार अनुकंपा की संस्कृति, जो मेहनत के बजाय मुफ्तखोरी को बढ़ावा देती है, इसको लेकर भी गंभीर चिंताएं हैं। हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनाने की बात तो करते हैं, लेकिन हमें यह समझना होगा कि केवल आर्थिक और भौतिक विकास से देश की एकता नहीं बन सकती। सामाजिक असमानताएं, बेरोजगारी, और वंचित वर्गों की अनदेखी विकास की राह में बाधा डाल रही हैं। आजादी की पौन सदी बीत चुकी है और हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यदि हम भारत को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बनाना चाहते हैं, तो हमें उन गरीब और वंचित वर्गों को भी मुख्यधारा में लाना होगा, जिनकी आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है। तभी हम एक सशक्त और एकीकृत भारत का निर्माण कर पाएंगे।

मोदी ने आरएसएस मुख्यालय के साथ दीक्षाभूमि का दौरा कर साधा राजनीतिक संतुलन

नीरज कुमार दुबे

भाजपा ने संघ के साथ संबंधों में सुधार किया जिसके चलते पार्टी को हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में विधानसभा चुनावों में जोरदार जीत मिली थी। दूसरी ओर, संघ और भाजपा के बीच मतभेदों को दोनों ही संगठनों के नेता नकारते हैं और कहते हैं कि ऐसी बातें वही लोग करते हैं जो भाजपा और संघ को नहीं समझते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नागपुर यात्रा के दौरान आरएसएस मुख्यालय स्थित हेडगेवार स्मृति मंदिर का दौरा कर नया इतिहास रच दिया क्योंकि संघ के 100 वर्षों के इतिहास में दूसरी बार देश का कोई प्रधानमंत्री राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय पहुँचा था। हम आपको याद दिला दें कि तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने वर्ष 2000 में अपने तीसरे कार्यकाल के दौरान नागपुर में संघ मुख्यालय का दौरा किया था। संयोग देखिये कि मोदी भी अपने तीसरे कार्यकाल के दौरान ही संघ मुख्यालय पहुँचे। मोदी के संघ मुख्यालय के दौरे पर जहां विपक्ष बौखला रहा है वहीं इस यात्रा ने आरएसएस के भीतर भी कई लोगों को सुखद आश्चर्य में डाल दिया है। वैसे कुल मिलाकर मोदी की इस यात्रा को भाजपा और आरएसएस द्वारा आपसी मतभेद दूर करने और एकजुट होने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से नागपुर में अपने संबोधन के दौरान आरएसएस की भरपूर प्रशंसा को अपने वैचारिक मार्गदर्शक के प्रति भाजपा के रुख में आये बदलाव के रूप में देखा जा रहा है। हम आपको याद दिला दें कि पिछले साल लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा था कि भाजपा उस समय से आगे बढ़ चुकी है जब उसे आरएसएस की जरूरत थी और अब वह सक्षम है तथा अपने काम खुद करती है। नड्डा की इस टिप्पणी से संघ कार्यकर्ताओं में रोष उत्पन्न हो गया था और लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा और आरएसएस के बीच दूरी देखी गयी थी जिसका नुकसान भाजपा को लोकसभा में बहुमत गंवा कर उठाना पड़ा था। हालांकि लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद भाजपा ने संघ के साथ संबंधों में सुधार किया जिसके चलते पार्टी को हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में विधानसभा चुनावों में जोरदार जीत मिली थी। दूसरी ओर, संघ और भाजपा के बीच मतभेदों को दोनों ही संगठनों के नेता नकारते हैं और कहते हैं कि ऐसी बातें वही लोग करते हैं जो भाजपा और संघ को नहीं समझते हैं। वैसे जानकारों का यह भी कहना है कि संघ को मुख्य आपत्ति इस बात पर थी कि भाजपा एक व्यक्ति केंद्रित

पार्टी बनती जा रही है। हम आपको याद दिला दें कि साल 2014 के बाद मोदी ब्रांड राजनीति के तहत भाजपा सारे चुनाव लड़ती रही है। लोकसभा चुनावों के बाद भाजपा ने अन्य नेताओं को भी आगे बढ़ाया है और आने वाले समय में दूसरी पंक्ति के कई और नेताओं को बड़ी भूमिकाएं मिलने जा रही हैं। वैसे, आरएसएस के शताब्दी समारोह और बेंगलुरु में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक से पहले प्रधानमंत्री की नागपुर यात्रा इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि भाजपा जल्द ही अपने नये राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव करने वाली है। हालांकि हाल ही में संघ की ओर से स्पष्ट किया गया था कि उसके सभी आनुषांगिक संगठन अपने कार्यों के बारे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि साल 2009 के लोकसभा चुनावों में भाजपा की करारी हार के बाद मोहन भागवत के हस्तक्षेप के बाद ही लालकृष्ण आडवाणी युग समाप्त हुआ था और मोदी आगे लाये गये थे। साल 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा के खराब प्रदर्शन के बाद मोहन भागवत की कुछ टिप्पणियों को पार्टी नेतृत्व और प्रधानमंत्री मोदी की सीधी आलोचना के रूप में भी देखा गया था। इसलिए ऐसा हो नहीं सकता कि भाजपा अपने नये अध्यक्ष के नाम पर बिना संघ प्रमुख से चर्चा किये बिना फैसला कर ले। हम आपको यह भी बता दें कि पूर्व प्रधानमंत्रियों और वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने पूर्व में सावधानी बरतते हुए सरकार और संघ के बीच अंतर सुनिश्चित किया लेकिन मोदी चूंकि खुद संघ के प्रचारक रहे हैं इसलिए वह संघ की तारीफ करने में नहीं चूकते।

हाल ही में तीन बड़े मौके आये जब मोदी ने अपने जीवन को सही मार्गदर्शन देने के लिए संघ का आभार जताया और इस सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन की भरपूर प्रशंसा की। प्रधानमंत्री ने नागपुर में भी आरएसएस को एक ऐसे संगठन के रूप में संदर्भित किया जिसने समर्पण और सेवा के उच्चतम सिद्धांतों को कायम रखा । साथ ही उन्होंने संघ की राष्ट्र निर्माण और विकास में रचनात्मक भूमिका को रेखांकित करके अपनी 2047 तक विकसित भारत की योजनाओं में संघ की भूमिका के महत्व को भी दर्शाया है। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रयागराज में हाल ही में संपन्न महाकुंभ मेले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए भी स्वयंसेवकों को श्रेय दिया था। इसके अलावा, हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारियों पर आरएसएस द्वारा की जाने वाली सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने पर लगाए गए प्रतिबंध को भी हटा दिया गया था। यही नहीं, जिस तरह भाजपा के वरिष्ठ नेता गठबंधन सरकार होने के बावजूद अपने मूल एजेंडे में शामिल मुद्दों पर आगे बढ़ने की बात कर रहे हैं वह इस बात का संकेतक है कि आरएसएस के कुछ मुख्य एजेंडे भाजपा की राजनीति में फिर से सबसे आगे आ रहे हैं। बहरहाल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संघ मुख्यालय के दौरे के साथ ही डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के पंचतीर्थों में से एक दीक्षाभूमि का भी दौरा कर राजनीतिक संतुलन साधने की कोशिश की। प्रधानमंत्री ने संघ मुख्यालय में दिये गये अपने संबोधन में भी बाबा साहेब को याद किया और भारतीय संविधान की भरपूर प्रशंसा की। प्रधानमंत्री मोदी ने आरएसएस मुख्यालय में डॉ. हेडगेवार स्मृति मंदिर का दौरा कर संघ के संस्थापकों को श्रद्धांजलि अर्पित की साथ ही वह दीक्षाभूमि भी गए, जहां डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने 1956 में अपने हजारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया था। मोदी दीक्षाभूमि स्थित स्तूप के भीतर गए और वहां रखी आंबेडकर की अस्थियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। मोदी ने जहां आरएसएस को भारत की अमर संस्कृति का 'वट वृक्ष' बताया वहीं उन्होंने दीक्षाभूमि की सामाजिक न्याय और दलितों को सशक्त बनाने के प्रतीक के रूप में सराहना करते

शहरी विकास के लिए एक चेतावनी है म्यांमार का भूकंप

प्रमोद भार्गव

म्यांमार में आए 7.7 तीव्रता के ताकतवर भूकंप ने 1700 से भी ज्यादा लोगों की जान ले ली और 2500 से भी ज्यादा लोग घायल हैं। भूकंप के प्रभाव में आकर जिस तरह से बहुमंजिला इमारतें ढहीं, सड़कें, पुल और बांध टूटे, बिजली और इंटरनेट सेवाएं ठप हो गई, यह प्रकृति की एक ऐसी नजीर है, जो बढ़ते शहरीकरण के लिए चेतावनी है। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में आए कुछ पलों के झटकों ने ही दुनिया के इस सुंदर शहर को थर्रा दिया। इसी बीच अमेरिका की भूगर्भीय सर्वेक्षण एजेंसी ने आशंका जताई है कि मरने वालों की संख्या 10 हजार से भी अधिक पहुंच सकती है। इस भूकंप के झटके भारत के पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल में भी अनुभव किए गए। चीन, वियतनाम, ताइवान, लाओस और श्रीलंका में भी भूकंप की तरंगें अनुभव की गई। याद रहे भारत के भुज में 24 साल पहले आया भूकंप भी 7.7 तीव्रता का था, जिसमें 20 हजार लोगों की मौतें हुई थीं और डेढ़ लाख लोग घायल हुए थे। तीन लाख से ज्यादा घरों को नुकसान हुआ था। म्यांमार का भूकंप काफी उथला था। इस भूकंप का केंद्र भूमि के 10 किमी नीचे था। भूकंप के केंद्र वाला म्यांमार का क्षेत्र संवेदनशील क्षेत्र के रूप में पूर्व से ही चिन्हित है। बावजूद यहां आवास और उद्योगों के लिए आलीशान अट्टालिकाएं खड़ी की जा रही हैं। भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के टकराने का परिणाम इस भूकंप को माना जा रहा है। दिल्ली राजधानी क्षेत्र में 17 फरवरी 2025 की सुबह 5.36 बजे रिक्टर स्केल पर चार तीव्रता वाले भूकंप के झटके और धमाकों जैसी अवाजें सुनी गई थीं। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार भूकंप का केंद्र दिल्ली के धौलाकुआं के झील पार्क क्षेत्र में 5 किमी की गहराई में था। इस कारण इसकी तीव्रता भूगर्भ में ही कमजोर पड़ गई और सतह पर नहीं आने पाई। बिहार में भी भूकंप के झटके अनुभव किए गए। इसका केंद्र धरती की सतह से 10 किमी नीचे था। इसलिए असर केवल अनुभव हुआ। बावजूद भविश्य में भूकंप का यह संकेत दिल्ली के लिए विनाश की चेतावनी है। क्योंकि दिल्ली, हरिद्वार और महेंद्रगढ़ देहरादून के ऐसे पठारनुमा टीले पर बसा हुआ है, जहां से भूकंप की भ्रंष रेखा गुजरती है। अतएव यहां हमेशा भूकंप का खतरा बना रहता है। यह संकट इसलिए भी है, क्योंकि यमुना नदी के मैदानी क्षेत्र में भूमि की परत नरम है। हालांकि इस भूकंप को विवर्तनिक परत (टेक्टोनिक्स प्लेट) में किसी बदलाव के कारण आना नहीं माना गया था। इसके आने का कारण स्थानीय भूगर्भीय विविधता को माना जा रहा है। याद रहे हिमालय के उत्तरी तलहटी में स्थित चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र शिगात्से के निकट तिंगरी काउंटी में 7 जनवरी 2025 को 7.1 तीव्रता का भूकंप आया था। इसमें 126 लोग मारे गए थे। पड़ोसी देश नेपाल और भारत में भी इसके झटके महसूस किए गए थे। भूकंप का केंद्र तिंगरी काउंटी में था, जो हिमालय की चोटी माउंट एवरेस्ट क्षेत्र का उत्तरी द्वार माना जाता है। अमेरिकी भूगर्भ सर्वेक्षण ने इस भूकंप की तीव्रता 7.1 आंकी थी। भूकंप से तिब्बत में किसी बांध या जालाषय को हानि नहीं पहुंची थी, गौरतलब है कि भूकंप ने भारतीय सीमा के निकट तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर दुनिया का सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना ने भारत और बांग्लादेश को चिंता में डाल दिया है। क्योंकि यह पूरा क्षेत्र भारत और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों में टकराव के कारण चीन के दक्षिण-पश्चिम हिस्से नेपाल ओर उत्तर-भारत में अकसर भूकंप आते रहते हैं। भूकंप की चेतावनी संबंधी प्रणालियां अनेक देशों में संचालित हैं लेकिन वह भू-गर्भ में हो रही दानवी हलचलों की सटीक जानकारी समय पूर्व देने में लगभग असमर्थ हैं। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देने वाले अमेरिका, जापान, भारत, नेपाल, चीन और अन्य देशों में भूकंप आते ही रहते हैं। इसलिए यहां लाख टके का सवाल उठता है कि चांद और मंगल जैसे ग्रहों पर मानव बस्तियां बसाने का सपना और पाताल की गहराइयों को नाप लेने का दावा करने वाले वैज्ञानिक आखिर पृथ्वी के नीचे उत्पात मचा रही हलचलों की जानकारी प्राप्त करने में क्यों असफल हैं ? जबकि वैज्ञानिक इस दिशा में लंबे समय से कार्यरत हैं।

कानून व्यवस्था में शिथिलता नहीं बरतें अधिकारी : एसपी

समय जगत, ललितपुर। ईद के साथ-साथ नवरात्रि व उर्स मेला को लेकर रविवार की देर रात पुलिस अधीक्षक मो.मुश्ताक ने रॉल-कॉल कर शान्ति व कानून व्यवस्था का जायजा लिया गया। एसपी ने कोतवाली सदर का आकस्मिक निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देशित करते हुये सम्पूर्ण परिसर व कार्यालय को स्वच्छ रखने के लिए निर्देशित किया गया। सभी अधिकारियों व चौकी इंचार्जो को निर्देश जारी किये गये कि वह कानून व्यवस्था में शिथिलता न बरतें। एसपी ने थाना कार्यालय, महिला हेल्प डेस्क के रजिस्टरों को चेक कर व्यवस्थित रख-रखाव हेतु निर्देश दिये। मुकदमों से संबंधित मालों का विधिक निस्तारण एवं सही रख-रखाव, शस्त्रों की नियमित साफ-सफाई रखने हेतु निर्देशित किया। थाने में लम्बित विवेचनाओं का गुण दोष के आधार पर विधिक निस्तारण करने व थाना क्षेत्र के वांछित अभियुक्तों, वारंटियों की गिरफ्तारी, अवैध शराब, मादक पदार्थो, पशु तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाने और थाने पर आने वाले शिकायतों का शत-प्रतिशत निस्तारण करने जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान सभी अधिकारीगण/चौकी इंचार्जो को आगामी त्यौहारों ईद के साथ ही नवरात्रि व उर्स मेला के दृष्टिगत सभी मस्जिदों, ईदगाह व चिन्हित स्थानों पर ड्यूटियां लगाने के सम्बन्ध में ब्रीफ किया गया। प्रभारी निरीक्षक कोतवाली को निर्देशित किया गया कि प्रतिदिन थाने पर आने वाले फरियादियों की शत-प्रतिशत जन सुनवाई कर उनकी समस्याओं का विधिक निस्तारण किया जाये एवं थाना क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाये, महिला सम्बन्धी अपराधों पर रोकथाम और जमीनी संबंधी प्रकरणों में राजस्व विभाग के सहयोग से गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया। आगामी त्यौहार ईद, नवरात्रि, रामनवमी आदि के दृष्टिगत प्रभारी निरीक्षक को सुरक्षा-व्यवस्था के संबंध में निर्देशित किया गया। एसपी ने निर्देशित किया गया कि यातायात नियमों का विशेष रूप से पालन कराना सुनिश्चित करें एवं चेकिंग के दौरान बिना हेल्मेट, शराब पीकर, फर्राटे भरने वाले आदि वाहन चालको की चौकिंग कर आवश्यक कार्यवाही करें।

न्यायिक अधिकारियों के तबादले

उरई। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर न्यायिक अधिकारियों के तबादले किए हैं। कुल 582 जजों के स्थानांतरण आदेश जारी हुए हैं। इनमें जालौन जिले के 9 जज भी शामिल हैं। जालौन से 4 एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज और 5 सिविल जज का स्थानांतरण किया गया है। जिसमें अपर जिला जज शिवकुमार द्वितीय, अपर जिला जज राजीव सरन तथा कोंच सिविल जज जूनियर डिवीजन के जज सुश्री उमैमा शाहनवाज और मोहित निर्वाल शामिल है।रविवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट के संयुक्त रजिस्ट्रार सतीश कुमार पुष्कर की ओर से ट्रांसफर का आदेश जारी किया गया है। स्थानांतरण हुए जजों को तुरंत नई तैनाती स्थल पर जॉइन करने को कहा गया है।जारी हुई सूची में अपर जिला जज प्रमोद कुमार गुप्ता उरई से बुलंदशहर, अपर जिला जज राजीव सरन को रामपुर, अपर जिला जज शिवकुमार द्वितीय को आगरा तथा अपर जिला जज अमृता शुक्ला को बरेली भेजा गया है।

तबादलों को लेकर शिक्षा विभाग चर्चा में

निवाड़ी । जिला निवाड़ी का शिक्षा विभाग इस समय सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में चर्चा में है यहां पर जिला शिक्षा अधिकारी उन्मेष श्रीवास्तव पुनः हाई कोर्ट जबलपुर डबल बैंच से आदेश करा कर पुनः जिला धिकारी महोदय द्वारा ज्वाइन करा लिया गया है इसके पहले वर्तमान जिला शिक्षा अधिकारी आर डी वर्मा भी हाई कोर्ट जबलपुर से आदेश करा कर कार्य कर रहे थे इसी तरह डी पी सी पद पर भी फूल सिंह दिनकर कार्य रत हैं पूर्व में कार्यरत डी पी सी राजेश पटैरिया जी कोर्ट से आदेश करा लाये है वर्तमान में दौनौं डी ओ पी सी पदस्थ हैं अब तो लोगों को आश्चर्य भी नहीं होता कि कब क्या हो जाये ।

विधायक अनिल जैन ने किया बड़े तालाब पर श्रमदान

समय जगत, निवाड़ी । जल गंगा संवर्धन अभियान (30 मार्च से 30 जून 2025) के तहत आज दिनांक 31 मार्च 2025 को क्षेत्रीय विधायक श्री अनिल जैन जी एवं नगर परिषद निवाड़ी अध्यक्ष श्री गुलाब अहिरवार, मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री अरविंद तिवारी एवं पार्षदगण द्वारा बड़े तालाब पर श्रमदान अभियान चलाया गया, जिसमें वार्ड क्रमांक 05 मे स्थित बड़े तालाब के घाट की सफाई की गई, जिसमें निकाय के कर्मचारी उपस्थित रहे ।

नालियों की नहीं हो रही सफाई

समय जगत, निवाड़ी । वार्ड नंबर 9 में रामलीला मैदान के पास नाली सफाई नहीं होने और झाड़ू नहीं लगने से गंदगी फैली हुई है मोहल्ले वालों का कहना है कि नव रात्रि चल रही है ऐसे में महिलाएं बड़ी देवी जी छोटी देवी जी ढारने के लिए जातीं हैं बडी असुविधा का सामना करना पड़ता है साथ ही वार्ड पार्षद एवं अध्यक्ष जी को भी अवगत कराया है यहां पर यदि पैवर्स बिछ जायें या सी सी हो जाये एवं गहरी नाली बन जाये तो वार्ड एवं रामलीला मैदान के एरिया में साफसफाई रहेगी उच्च अधिकारियों का ध्यान अपेक्षित है ।

ग्राम पंचायतों में लोगों ने किया श्रमदान, तीन माह चलेगा जल गंगा संवर्धन अभियान

निवाड़ी। कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड़ के निर्देशन में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत ज्योरा मौरा, गैलवारा, टोडी, बंजारीपुरा, ककावनी, चिकटा गुलेदा सहित जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों में जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करने की दिशा में जनभागीदारी के सहयोग से जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं लोगों द्वारा श्रमदान में सहभागिता की गई। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव नेतृत्व में जल गंगा संवर्धन अभियान को 30 जून 2025 तक चलाया जायेगा। नब्बे दिवसीय अभियान में नये तालाबों का निर्माण, पुराने तालाबों, बावड़ियों और कुंओं का जीर्णोद्धार, अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही और सघन पौधरोपण किया जाएगा। उन्होंने निर्देशित किया कि चंदेल एवं बुंदेल कालीन तालाब का जीर्णोद्धार एवं अन्य जल संवर्धन कार्यो हेतु जन अभियान चलेगा। अभियान को सफल बनाने हेतु समिति का गठन, व्यापक प्रचार-प्रसार व जागरूकता अभियान, प्रत्येक ग्राम पंचायत में जलदूत नियुक्त करने एवं विभागों के कार्य दायित्व एवं जल स्त्रोतों की साफ-सफाई कर अविरल और स्वच्छ किया जाएगा।

पानी का काला कारोबार, अवैध भूजल दोहन से सूख रही धरती की कोख

नमामि गंगा योजना को पलीता लगाते अवैध वाटर प्लांट

समय जगत, ललितपुर। जल ही जीवन है, लेकिन अब लोगों को जीवन देने वाला जल व्यापार में बदल गया है। बात व्यापार में बदलने तक ही सीमित नहीं रही। अब इसका धंधा करने वाले लोग रुपया कमाने के लालच में इस कदर अंधे हो गए हैं कि वह लोगों को पानी के नाम पर बीमारियां बांट रहे हैं। डाउन टू अर्थ की रिपोर्ट के अनुसार ललितपुर सहित पूरा भारत गंभीर जल संकट का सामना कर रहा है, जहां सिंचाई के लिए भूजल का दोहन बढ़ रहा है, पानी की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है और पानी की कमी से लाखों लोग प्रभावित हो रहे हैं। ललितपुर में नलों से गंदा पानी आना व खारेपन की समस्या कुछ लोगों के लिए वरदान बन गई है। सीधे सबमर्सीबल से निकाले जाने वाले जल का खारापन दूर करने के लिए इस धंधे में उतरे लोग पानी ठण्डा करके आर.ओ. का नाम देकर खुलेआम बेच रहे हैं और शहर की जनता के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। जल निगम और जल संस्थान विभाग अभी तक अपने-अपने क्षेत्रों में लोगों को स्वच्छ जल मुहैया नहीं करा पाया है। यही वजह है कि जिले में करीब सैकड़ों व्यापारी गली-मोहल्लों में आर.ओ. प्लांट के नाम पर प्रतिदिन अवैध रूप से लाखों लीटर भूजल दोहन कर रहे हैं, जो घर-घर और दफ्तर व समारोह में बोतल और कंटेनर से मनमाने दामों में शुद्ध जल के नाम पर मानकों के विपरीत जलापूर्ति कर रहे हैं। जिले में शहरी क्षेत्र में अनेकों अवैध आर.ओ. प्लांट गली-मोहल्लों में संचालित हो रहे हैं। शहर के विभिन्न वार्डों के कई मोहल्लों के अलावा नगर पालिका सीमा से बाहर अनेकों आरओ प्लांट संचालित हो रहे हैं। कमाल की बात किसी एक आर.ओ. प्लांट के पास भूगर्भ जल विभाग के अलावा अन्य सम्बन्धित विभागों की ओर से न कोई एनओसी है न लाइसेंस। शहरी क्षेत्र के गली-मोहल्लों में आर.ओ.प्लांट लगाकर पानी जांच कराए बिना 20-20 लीटर के कंटेनरों और 200 से 500 लीटर के टैंकों में भरकर सप्लाई की जा रही है। भूजल दोहन पर प्रतिबंध के बावजूद रोजाना लाखों लीटर से अधिक अवैध रूप से भूजल का दोहन किया जा रहा है। रोक के बावजूद जगह-जगह सबमर्सिबल लगे हैं, जिससे दिनों दिन धरती की कोख सूख रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक प्रतिवर्ष भूगर्भ से पानी का स्तर नीचे जा रहे जल स्रोत एक चिंता का विषय है। नीति आयोग की समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (सीडब्ल्यूएमआई) रिपोर्ट में जल संकट की गंभीरता पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें 21 प्रमुख शहरों में भूजल स्तर शून्य तक पहुंचने का खतरा है।

कौंडियों के दाम जमीन बेचने के लिए दबाव बना रहे दबंग

समय जगत, ललितपुर। सिटी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत सिविल लाइन स्टेशन रोड निवासी रेलवे की रिटायर्ड कर्मचारी महेंद्र पुरोहित पुत्र रामनाथ पुरोहित ने बीते दिन जिलाधिकारी को एक शिकायती पत्र सौंपा था। इस पत्र में उन्होंने बताया है कि वार्ड नंबर 7 रामनगर आर.एम.व्ही. महाविद्यालय के आगे वृद्धावस्था आश्रम के सामने एक भूखंड खाली पड़ा है, जिसकी वह देखरेख के लिए अक्सर वहां जाया करते हैं। वहीं दूसरी ओर उनका आरोप है कि इसी मोहल्ले के कुछ लोगों ने अपने अज्ञात साथियों के साथ एकराय होकर उक्त जमीन उन्हें बेच देने के लिए धमका रहे हैं। महेन्द्र पुरोहित ने बताया कि वह सेवानिवृत्त होने के बाद अस्वस्थ्य रहता है, जिस कारण उसे जमीन कौडियों के दाम बेचने के लिए धमकाया जा रहा है। पीड़ित ने बताया कि उसकी जमीन के पास स्थित किराना की दुकान पर कुछ लोगों ने इस घटनाक्रम को देखा भी है। पीड़ित ने बताया कि वह काफी दहशत में है। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस से मामले में जांच करायी जाकर उक्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही किये जाने की गुहार लगायी है।

मेड़ तोड़कर खेत में जानवर घुसने का उलाहना देने पर मारपीट

समय जगत, ललितपुर । सिटी पुलिस चौकी अंतर्गत मोहल्ला चौबयाना निवासी मन्नूलाल कुशवाहा पुत्र प्यारेलाल ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि शनिवार की सुबह वह अपने ग्राम पनारी स्थित खेत में फसल की रखवाली कर रहा था। तभी मेड तोड़कर जानवर उसके खेत में घुस आये, जिसका उलाहना देने पर ग्राम पनारी निवासी फूलसिंह, आधार सिंह पुत्रगण चन्द्रभान, सियाराम, डेगराज, शोभाराम पुत्रगण फूलसिंह व उनके परिवार की महिलायें राजकुमारी, महेश, रचना इत्यादि अपने चार अज्ञात सहयोगियों के साथ एकराय होकर आये और उसके भतीजे सुनील को जान से मारने की नीयत से लाठी-डण्डा व कुल्हाड़ी से प्रहार कर दिया। इस हमले में उसका भतीजा सुनील कुशवाहा मौके पर बेहोश हो गया। शोरगुल सुनकर वह व प्रियंका ने सुनील को बचाने का प्रयास किया तो उसके साथ भी मारपीट कर दी। पीड़ित ने बताया कि उक्त लोगों ने पुलिस से शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। यह भी बताया कि उक्त लोग आपराधिक किस्म के लोग हैं और उसके व उसके परिवार से कोई भी आपराधिक घटना को अंजाम दे सकते हैं। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफबीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 351 (3) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

टायरलीवर व लोहे की रॉड से हमला

समय जगत, ललितपुर। कोतवाली अंतर्गत ग्राम बम्हौरी नांगल में रहने वाले सियाराम पुत्र फूलसिंह ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसके पिता, बच्चे और भाभी राजकुमारी पत्नी शोभाराम को सुनील कुशवाहा, राजा टूडी, पलया के साथ चार-पांच अज्ञात लोगों ने एकराय होकर 2 से 3 दिन पहले गालियां दी थीं। इसी रंजिश को लेकर शनिवार को मारपीट करते हुये ट्रैक्टर के लोहे वाली टारलीवर व लोहे की रॉड से मारपीट की है। वहीं पिता फूलसिंह का सिर ट्रैक्टर में मार दिया, जिससे वह सभी घायल हो गये। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर बीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2) व 352 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

हार्वेस्टर से फसल काटने पर दो पक्षों में मारपीट

समय जगत, ललितपुर। बानपुर थाना के ग्राम तोर टपरियन में रहने वाले फेटू पुत्र सूरज सिंह यादव ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि शुक्रवार की सुबह करीब साढ़े आठ बजे वह अपनी पत्नी अनीता के साथ खेतों में गेंहू की फसल काटने के लिए खेतों पर गया था। तभी उसने देखा कि गांव के रामस्वरूप पुत्र भैयालाल, रामनरेश व राममिलन पुत्रगण रामस्वरूप, शिवशंकर पुत्र रामसहाय राजपूत अपने चार अज्ञात लोगों के साथ उसके खेतों में खड़ी गेंहू की फसल को जबरन काट रहे थे। पीड़ित ने बताया कि उसने अपनी पत्नी के साथ मौके पर पहुंच कर उक्त लोगों को फसल काटने से रोका तो उक्त लोगों ने गालियां देते हुये मारपीट करने लगे। इसी बीच जब उसकी पत्नी ने बचाव किया तो उसके साथ भी लाठी-डण्डों से मारपीट कर दी। आरोप है कि उक्त लोग उसे जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गये। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफबीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 352, 351 (3) के तहत मामला दर्ज किया है। वहीं दूसरे पक्ष की ओर से रामस्वरूप पुत्र भैयालाल राजपूत ने बताया कि बीती 28 मार्च की सुबह करीब साढ़े आठ बजे वह अपने खेत में खड़ी फसल काटने के लिए हार्वेस्टर मशीन लेकर गया था।

कुकर्म की रिपोर्ट दर्ज

समय जगत, उरई। एक 13 साल के किशोर के साथ कुकर्म की वारदात सामने आई है। एक गांव के रहने वाले एक युवक ने किशोर को मंदिर ले जाने के बहाने खेत में ले जाकर उसके साथ कुकर्म की वारदात को अंजाम दिया। साथ ही किसी को बताने पर उसको जान से मारने की धमकी दी।इस घटना की शिकायत पीड़ित के परिजनों ने पुलिस से की। मगर पुलिस मामले को दबाने में लगी रही। न्याय न मिलने पर परिजन किशोर को लेकर एसपी के पास पहुंचे गुहार लगाने पहुंचे। जहां एसपी के आदेश पर पुलिस ने मामला पंजीकृत करते हुए आरोपी की गिरफ्तारी के लिए दबिश देनी शुरू कर दी।

मामला कुठौंद थाना क्षेत्र का है। इस थाना क्षेत्र के एक गांव का रहने वाला 13 वर्षीय किशोर 15 मार्च को होली पर मंदिर में पूजा करने जा रहा था। इसी दौरान गांव का ही रहने वाला युवक उपेन्द्र सिंह पुत्र परशुराम उर्फ कल्ले ने किशोर को देखते हुए अपनी बाइक पर बैठा कर गेहूं के खेत में ले गया। जहां उसके साथ जबरन कुकर्म किया। इतना ही नहीं उसके साथ कुकर्म करते हुए वीडियो बना लिया। जिसे सोशल मीडिया में वायरल कर दिया। अपने साथ हुए इस घटना के बारे में किशोर ने अपने घर परिवार के लोगों को बताई, जिसके बाद 13 वर्षीय किशोर की बहन ने इस घटना के बारे में हदरुख पुलिस चौकी पहुंचकर जानकारी दी।मगर पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई न करने पर पीड़ित और उसकी बहन कुठौंद थाने पहुंची। मगर पुलिस ने इस मामले को दबाने की कोशिश की। आरोपी के खिलाफकोई भी कार्रवाई नहीं की। 15 दिन किशोर और उसकी बहन न्याय के लिए पुलिस के चक्कर लगाती रही, मगर कोई कार्रवाई न होने पर पीड़ित की बहिन पुलिस अधीक्षक डॉक्टर दुर्गेश कुमार के पास पहुंची। जहां उसने पूरे घटना के बारे में जानकारी दी। साथ ही वायरल वीडियो के बारे में भी अवगत कराया। इसका संज्ञा लेते हुए पुलिस अधीक्षक ने तत्काल इस मामले में कार्रवाई करने के निर्देश दिए, इसके बाद कुठौंद थाना पुलिस द्वारा मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया।इस मामले में कुठौंद थाने के प्रभारी निरीक्षक का कहना है कि शिकायत के आधार पर आरोपी उपेंद्र के खिलाफपोक्सो एक्ट तथा अप्राकृतिक सेक्स की धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया गया है। साथ ही आरोपी की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

आरोग्य धाम संस्था द्वारा एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

ललितपुर। रविवार को सुपर मार्केट स्थित अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार भवन में प्रेस क्लब अध्यक्ष राजीव बबेले (सप्पू) की अध्यक्षता में प्राकृतिक चिकित्सा का निरूशुल्क शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में योग, थेरेपी, कायरो प्रेक्टिक, न्यूरो-थेरेपी, कमर दर्द, साइटिका दर्द, फ्रेजन सोल्डर, ज्वाइंट पेन, बैंक पेन, महिला संबंधी उपचार, गठियावात, लकवा घुटने का दर्द, घुटनों का दर्द की रीड की हड्डी में दर्द होना एवं बैंक पेन, शुगर, स्वांस एलर्जी, संबंधी समस्याओं का उपचार किया गया, जिसमें हरिद्वार ऋषिकेश में संचालित आरोग्य धाम के डा.पंकज श्रीवास्तव कयरो प्रैक्टर, डा.हर्षित तिवारी द्वारा मरीजों को उपचार किया। आयोजन करता पं.विनोद मिश्रा पत्रकार ने बताया कि आने वाले समय में इसी प्रकार के निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कराकर क्षेत्रीय लोगों को लाभान्वित कराएंगे। शिविर में आए लोगों ने कार्यक्रम की सराहना की। इस दौरान योगा टीचर मानवेन्द्र सिंह, प्रेस क्लब महामंत्री अमित सोनी, कार्यालय प्रभारी अजित भारती, अमित लखेरा मौजूद रहे।

नवरात्रि महोत्सव को लेकर वरदानी भवन में लगी चैतन्य झांकी

समय जगत, ललितपुर। वरदानी भवन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सेंटर पर बड़े ही धूमधाम से पवित्र नवरात्रि महोत्सव मनाया गया। इस दौरान मां भवानी की चैतन्य मनमोहक झांकी के दिग्दर्शन एवं बच्चों ने नृत्य कर माता की आराधना। कार्यक्रम में दादी गुलजारजी, दादी जानकीजी एवं भोपाल जॉन इंचार्ज महेंद्र भाईसाहब की स्मृति में ब्रह्मभोज रहा। जिसमें बच्चों, माताओं, बहनों सहित कई श्रद्धालु मौजूद रहे। सेंटर इंचार्ज राजयोगिनी बीके चित्ररेखा दीदी ने अध्यात्मिक नवरात्रि महोत्सव के महत्व के बारे में बताया कि शिव शक्तियां, असुरी शक्ति का नाश करती हैं।

उन्होंने वर्तमान समय में हर एक को अपने अंदर से बुराइयों को दूर करने की बात पर जोर दिया। मंच संचालिका राजयोगिनी मायारानी दीदी ने दादियों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा की दादी सदैव स्वयं पर बहुत अटेंशन देती थी। आप सच्चाई सफाई और सादगी अर्थात् ज्ञान, योग की यात्रा में तत्पर रहे। सच्ची दिल, बड़ी दिल, उदार दिल की धनी थी। अंत में बड़ी दीदी ने सभी को आत्म स्मृति का तिलक लगाकर नव वर्ष की शुभकामनाएं दी।

इस दौरान बीके गीता दीदी, बीके प्रीती दीदी, बीके रूबी दीदी, बीके प्रियंका बहन, निशा बहन, बीके पूजा बहन, बीके शिवानी बहन, बीके विद्यासागर भाई, साइंटिस्ट दीपक कौशिक, तनवी कौशिक, संतोष कौशिक, मुन्ना कौशिक, शिवम कौशिक, आरएसएस विभाग, जिला टोली सदस्य एवं कार्य प्रमुख सेवक रमेश सोनी, सज्जन कुमार शर्मा, प्रताप नारायण गोस्वामी, आशीष चौबे, एड.रामस्वरूप साहू, एवं अन्य सेवक संघ के सदस्य, एड.मुकेश साहू (शैडो ग्रुप), लक्ष्मीनारायण साहू, कुंजबिहारी उपाध्याय, डा.श्रीराम साहू, केशव प्रसाद पांडे, राधेश्याम ताम्रकार, अशोक भाई, डा.अरुण भाई, गणेश साहू, अमन जोशी, मनोज जोशी, मनीष दुबे, रोहित श्रीवास्तव, हरिशंकर साहू, रामप्रसाद भाई, विनोद यादव, शुभम भाई, नितिन निरंजन, विजय सिंह (दादी), डा.पुरुषोत्तम निरंजन, काशीराम साहू (बाबाजी), विनोद झा, सहदेव ठाकुर, गोपाल साहू, कृष्णकांत सोनी (पत्रकार), कैलाश नारायण, कैलाश दुबे, खुशीलाल भाई, दातार भाई, भगवानदास भाई, वीरेंद्र भाई एवं अनेक भाई-बहन उपस्थित रहे।

कैमरे का कार्य करके लौट रहे युवक से मारपीट

ललितपुर। सिटी पुलिस चौकी अंतर्गत मोहल्ला सरदारपुरा में रहने वाले दुर्गेश तिवारी पुत्र त्रसिंगदास ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि बीती 25 मार्च को रात करीब 11 बजे जब वह झांसी रोड स्थित अमर पैलेस के पास से कैमरे का कार्य करके अपने घर की ओर आ रहा था, कि तभी मोहल्ला सुभाषपुरा में रहने वाले राहुल नायक उर्फराजा पुत्र पुरुषोत्तम नारायण व वंशीपुरा रामनगर निवासी पंकज एकराय होकर आये और उसे गालियां देने लगे। विरोध करने पर उक्त लोगों ने उसके साथ जमीन पर पटककर लात-घूसों से मारपीट कर दी। हमले में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। शोरगुल सुनकर मोहल्ले के लोग मौके पर आ पहुंचे और बीच-बचाव किया। आरोप है कि उक्त लोगों ने उसे जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफबीएनएस की धारा 352, 115 (2), 351 (3) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होल्कर की त्रिशताब्दी जन्मोत्सव वर्ष मनाया

समय जगत, ललितपुर। सामाजिक समरसता मंच के तत्वाधान में पुण्यशलोक देवी अहिल्या बाई होल्कर की त्रिशताब्दी जन्मोत्सव वर्ष पर आयोजित प्रबुद्धजन संगोष्ठी एवं चित्र प्रदर्शनी के अवसर का आयोजन जीजीआईसी सभागार में किया गया। शुभारंभ दीपप्रज्वलन तथा सरस्वती शिशु मंदिर की छात्राओं के सरस्वती वंदन से हुआ। मुख्य अतिथि एडीएम अंकुर श्रीवास्तव ने समाज में सामाजिक समरसता की महती भूमिका पर प्रकाश डालते हुये अपने सैन्य जीवन का उदाहरण दिया। जिसमे देश के विभिन्न क्षेत्रों, जातियो वर्गो तथा भाषाओं को बोलने वाले एक यूनिट में समरसता के साथ देश सेवा में तत्पर रहते है तथा भगवान राम को समरसता का सबसे बड़ा प्रतीक बताते हुये कहा कि उन्होने वनवास के समय वन में रहने वाले वनवासी जनजातियों, जीव जंतुओं को साथ लेकर अधर्म के विरुद्ध विजय प्राप्त की। नेमवि के पूर्व प्राचार्य प्रो.भगवत नारायण शर्मा ने लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये उनके द्वारा सामाजिक समरसता के क्षेत्र में किए गए कार्यो पर प्रकाश डाला गया। धर्मेंद्र गोस्वामी द्वारा हिन्दू समाज के धार्मिक ग्रन्थों में कम्युनिस्ट विचारधारा के लेखकों द्वारा झूठ का सहारा लेकर सामाजिक समरसता के विरुद्ध षड्यंत्र किए जाने को रेखांकित किया। उन्होने हिन्दू युवाओं को अपने सांस्कृतिक विरासत कि सही जानकारी प्राप्त कर उसे आगे बढ़ाने का आग्रह किया। मुख्य वक्ता एवं सामाजिक समरसता के प्रांत संयोजक रविशंकर द्वारा पुण्यशलोक माता अहिल्याबाई होल्कर के जीवन उनके संघर्षो तथा उनके द्वारा सामाजिक समरसता के लिए किए गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुये उन्हे आज के परिवेश में अनुकरणीय बताया। सामाजिक समरसता के सह प्रांत संयोजक सुभाष हर्ष, समरसता के विभाग संयोजक सीताशरण तिवारी, झांसी से मुन्नालाल ने भी सामाजिक समरसता की आवश्यकता पर जोर दिया।

त्योहारों पर कानून व्यवस्था में शिथिलता नहीं होगी बर्दाश्त : एसपी

समय जगत, ललितपुर । एसपी मो.मुश्ताक ने शनिवार की देर रात गूगल मीट करते हुये जिले के सभी पुलिस अधिकारियों, थाना प्रभारियों से वार्ता की। एसपी ने त्यौहारों पर कानून व्यवस्था को दुरुस्त बनाये रखने के लिए निर्देशित किया। आगामी त्यौहार ईद, नवरात्रि, रामनवमी आदि के दृष्टिगत सुरक्षा, शांति व कानून- व्यवस्था बनाये रखने, अराजक तत्वों की सतत रूप से निगरानी रखने और उनके विरुद्ध आवश्यक निरोधात्मक कार्यवाही करने आदि के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। एसपी ने सम्बन्धितों को अपने-अपने क्षेत्र में ईद, नवरात्रि, रामनवमी के दृष्टिगत धर्मगुरुओं, सम्भ्रांत व्यक्तियों के साथ शांति समिति की बैठक कर आयोजन के संबंध में आयोजकों से वार्ता कर, परम्परागत कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कोई भी कार्यक्रम का आयोजन न करने तथा मीटिंग में प्राप्त होने वाली शिकायतों का उचित व समयबद्ध निस्तारण कराए जाने हेतु निर्देशित किया। समस्त थाना प्रभारियों को ईदगाह/मस्जिदों पर पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटियां लगाने के निर्देश दिये। सभी डीजे मालिक, संचालकों, विवाह घर के मालिक, मैनेजर के साथ मीटिंग कर शासन के आदेशों-निर्देशों से अवगत कराने और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्यवाही के लिए कहा गया। सुरक्षा, शांति व कानून-व्यवस्था को बनाये रखने के लिए निर्देशित किया गया कि अपने-अपने थाना क्षेत्रों में सतत् रूप से होटल, ढ़ाबा, रेस्टोरेंट आदि सार्वजनिक स्थानों पर भ्रमण शील रहकर चेकिंग करना सुनिश्चित करें। समस्त थाना प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्र में निवास कर रहे किरायेदारो का भौतिक सत्यापन करने हेतु निर्देशित किया गया है। त्योहारों के दृष्टिगत हॉटस्पॉट स्थानों को चिन्हित कर, उनका भौतिक रूप से सत्यापन किया जाये तथा चिन्हित स्थानों पर पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटिया लगाने हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया। त्योहार के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रम, नवरात्र समारोह/ जुलूस वाले स्थानो का भौतिक रूप से निरीक्षण कर आयोजकों से वार्ता करने के लिए कहा गया। समस्त थाना प्रभारियों/यातायात प्रभारी को प्रतिदिन वाहनों की चौकिंग कर क्षमता से अधिक सवारी बैठाने, बिना नम्बर प्लेट, हेलमेट/सीट बेल्ट का उपयोग न करने वाले तथा रोड़ पर स्टंटबाजी करने वाले वाहन चालकों /स्वामियों पर वैधानिक कार्यवाही के लिए सख्त निर्देश दिये गये। समस्त ई-रिक्शा स्वामियों/चालको के साथ मीटिंग कर उनका भौतिक सत्यापन करने और ई-रिक्शा किराये पर चलवाने वालों को भी निर्देश जारी किये गये कि नाबालिग को ई-रिक्शा किराये पर न दिया जाये। क्षेत्राधिकारियों/थाना प्रभारियों को पीआरवी/डायल-112 की गाडियों की नियमित चौकिंग करने को कहा गया। क्षेत्र में स्थित बैंको की लगातार व सतर्क चौकिंग करने के साथ-साथ सी.ए.ए./एन.आर.सी. के समय चिन्हित किये गये अपराधियों की सतत् निगरानी हेतु निर्देशित किया गया। जनपद में घटित अपराधों की समीक्षा की गयी तथा लम्बित विवेचनाओं/पार्ट पीआई का गुण-दोष के आधार पर शीघ्र निस्तारण कराने तथा विभिन्न अभियोगो में वांछित, एन.बी.डब्लू., कुर्की वारण्ट आदि से सम्बन्धित अभियुक्तों की शीघ्र गिरफ्तारी/तामीला करने हेतु निर्देशित किया। जनपद में गैंगस्टर एक्ट की धारा 14 (1) के अंतर्गत, सम्पति जब्तीकरण की प्रक्रिया व पंजीकृत अभियोगों में वांछित, वारन्टी, टॉप टेन, अपराधियों के विरूद्ध गिरफ्तारी की कार्यवाही, पुरस्कार घोषित अपराधियों की गिरफ्तारी, एच.एस.की सतत् निगरानी, अवैध विस्फेटक पदार्थो, शस्त्रों की बरामदगी, अवैध शराब निर्माण, बिक्री, जुआ, सट्टा आदि के विरूद्ध विशेष अभियान चलाया जाये। किसी भी दशा में जनपद में अवैध शराब/ मादक पदार्थों की बिक्री न हो। थाना क्षेत्र के अभ्यस्त अपराधियों/ हिस्ट्रीशीटर का भौतिक सत्यापन कर उनकी सतत निगरानी और सक्रिय अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोलने की कार्यवाही हेतु समस्त क्षेत्राधिकारियों/थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया।

स्वर्णिम प्रशासन मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय जागृति अभियान का हुआ भव्य समापन

समय जगत, भोपाल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रशासक सेवा प्रभाग के द्वारा स्वर्णिम प्रशासन मध्य प्रदेश राज्यस्तरीय जागृति अभियान राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी, क्षेत्रीय निदेशिका म.प्र. एवं राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग एवं राजयोगी बी के हरीश भाई जी मुख्यालय संयोजक प्रशासक सेवा प्रभाग के कुशल मार्गदर्शन में एवं बीके डॉ. रीना दीदी, क्षेत्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग के नेतृत्व में समापन समारोह पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज भोपाल जोन के संस्थापक एवं प्रशासक सेवा प्रभाग के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय राजयोगी महेंद्र भाई साहब की 16वीं पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर भोपाल जोन की सैकड़ो वरिष्ठ दीदियां उपस्थित रही। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमति मालती राय, महापौर, भोपाल रही, उन्होंने अभियान के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम के विशिष्ट तिथि श्री अवधेश प्रताप सिंह, प्रमुख सचिव, म.प्र. विधान सभा, श्रीमति भावना वालिम्बे (आई.ए.एस.) निदेशक और नियंत्रण अधिकारी, जनगणना कार्य निदेशालय, म.प्र. गृह मंत्रालय भारत सरकार, श्री हरिनारायणाचारी, पुलिस आयुक्त, भोपाल, तरसेम सिंह जीरा महाप्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, अनिल बाजपेयी, निदेशक, प्रेस्टिज ग्रुप रहे। 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज' थीम के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज भोपाल जोन के क्षेत्रीय मुख्यालय भोपाल में प्रशासकों, प्रबंधकों तथा कार्यपालकों हेतु स्वर्णिम प्रशासन मध्यप्रदेश जागृति राज्यस्तरीय अभियान का शुभारंभ मध्यप्रदेश

के राज्यपाल माननीय मंगू भाई पटेल जी के द्वारा किया गया था । इस अवसर पर अभियान के अंतर्गत माननीय राज्यपाल महोदय ने विभिन्न यात्राओं का शुभारंभ किया था । अभियान के अंतर्गत यात्राओं के माध्यम से संपूर्ण मध्यप्रदेश के प्रशासकों, प्रबंधकों तथा कार्यपालकों हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हे आध्यात्मिक रूप से सशक्त कर सुप्रशासन एवं स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने हेतु सशक्त करने हेतु अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए । अभियान के अंतर्गत नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच 8 यात्राएं निकाली गई 7 अभियान के अंतर्गत लगभग 25 जिलों में 200 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसके माध्यम से प्रशासनिक क्षेत्र के लगभग 40000 अधिकारी एवं कर्मचारी लाभान्वित हुए। स्वर्णिम प्रशासन मध्यप्रदेश जागृति राज्य स्तरीय अभियान का नेतृत्व ब्रह्माकुमारीज ब्लेसिंग हाउस भोपाल की निदेशिका एवं संयोजिका प्रशासक सेवा प्रभाग ब्रह्माकुमारीज भोपाल जोन की क्षेत्रीय संयोजिका बी के डॉ. रीना दीदी ने किया। समूचे अभियान मे अभियान सदस्य के रूप में बी के ऋचा बहन, बी के राहुल भाई एवं बी के बी के राम भाई साथ चल रहे थे। अभियान का समापन ब्रह्माकुमारीज क्षेत्रीय मुख्यालय राजयोग भवन भोपाल में रविवार दिनांक 30 मार्च 2025 को भव्य समारोह में हुआ। स्वर्णिम प्रशासन मध्य प्रदेश राज्यस्तरीय जागृति अभियान के भव्य समापन समारोह कार्यक्रम का उद्घाटन मंचासीन अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमार हरीश भाई , मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग रहे। हरीश भाई जी ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा प्रशासकों, प्रबंधकों एवं कार्यपालकों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण का कार्य पिछले 40 वर्षों से लगातार किया जा रहा है। उन्होंने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बजी सितम्बर में आबू रोड में होने वाले सम्मेलन हेतु सभी को आमंत्रण दिया। समापन समारोह में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी, क्षेत्रीय निदेशिका म.प्र. एवं राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग ने आशीर्वचन व्यक्त किए। बीके रीना दीदी, क्षेत्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग ने अभियान में हुई सेवाओं का प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने सभी को राजयोग ध्यानाभ्यास भी कराया।

संडे साइकिल अभियान की शुरुआत

समय जगत, रतलाम । नववर्ष का प्रारंभ सेहत दुरुस्त रखने के संकल्प के साथ रोटरी क्लब ऑफ रतलाम डायमंड द्वारा 30 मार्च को संडे साइकिल अभियान की शुरुआत की इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय, वरिष्ट परिचालन अधिकारी अजय ठाकुर,युवा मोर्चा अध्यक्ष विपल्व जैन क्षेत्रीय पार्षद राजश्री मयूर पुरोहित, क्रीड़ा भारती सचिव अनुज शर्मा थे। प्रारम्भ अतिथियों द्वारा भारत माता को माल्यार्पण किया एवं उपस्थित साइकिल सवारों को शपथ दिलवाई उपाध्याय ने कहा कि वर्तमान दौर में शारीरिक दक्षता एवं निरोगी काया करोड़ो की माया है प्रत्येक व्यक्ति को व्यायाम जरूर करना चाहिए, क्लब द्वारा इस मुहिम से साइकिल के प्रति रुझान बढ़ेगा अनुकरणीय पहल है।

अजय ठाकुर , जैन ने भी अपने विचार रखे। क्लब अध्यक्ष अश्विनी शर्मा ने बताया कि प्रत्येक रविवार को साइकिल अभियान चलाया जाएगा एवम् पौष्टिक आहार, ओ आर एस भी वितरण किया जाएगा आपने नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान से जुड़ने की अपील की। इस अवसर पर राहुल रांका, निखिल मिशा, मनोज उपाध्याय, विवेक शर्मा हार्दिक कुरुवारा, भूषण, प्रदीप राव, जितेंद्र राणावत उपस्थित रहे।कार्यक्रम का संचालन सुरेंद्र झामर ने आभार अमित नागर ने व्यक्त किया।

प्रगति स्कूल खिरकिया की बड़ी लापरवाही, छात्र छात्राओं पर मधुमक्खियों का हमला, क्या होगी कार्यवाही

समय जगत, खिरकिया। परिजन शासकीय स्कूलों का भरोसा न करते हुये निजी प्रायवेट स्कूलों पर भरोसा करके अपने नन्हे मुन्ने बच्चो को शिक्षा हेतु स्कूल भेजते हैं। ऐसा ही मामला हरदा जिले की तहसील खिरकिया में स्थित निजी स्कूल का सामने आया है। जहाँ बच्चों की सुरक्षा को लेकर स्कूल प्रबंधन की बड़ी लापरवाही उजागर हुई। विगत दिन शनिवार को प्रगति स्कूल में छात्र छात्राए पेपर देने गये हुये थे स्कूल परिसर में लगी मधुमक्खियों ने बच्चों पर अचानक हमला कर दिया, जिससे स्कूल परिसर में बच्चो के बीच अफरा तफरी मच गई।

मधुमक्खियों ने बेक़सूर और मासूम छात्राओं को जमकर काटा हमले में सभी छात्राएं गंभीर रूप से घायल हो गई जिन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। प्रगति स्कूल में ग्यारहवीं के बच्चों की परीक्षा थी छात्रायें स्कूल में पहुंचीं ही थी तभी अचानक मधुमक्खियों ने उन पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया हमले के बाद स्कूल परिसर में भगदड़ और अफ़रातफ़री मच गई छात्राएं घबराकर

इधर उधर भागने लगीं और जैसे तैसे अपनी जान बचाई। इस पूरे घटनाक्रम को देखकर आसपास के लोगों ने छात्राओं की मदद की और स्कूल प्रबंधन की जमकर आलोचना की।

लोगों और पालकों का कहना है कि इस मामले में स्कूल प्रबंधन की गंभीर लापरवाही सामने आई है घटना में किसी की जान भी जा सकती थी। दरअसल, छात्राएं जब स्कूल में परीक्षा देने पहुंची, तभी अचानक मधुमक्खियों के झुंड ने उन पर हमला कर दिया।

हमला इतना जोरदार था कि सभी बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए और बेसुध होकर इधर उधर भागने लगे आसपास के निवासियों ने मधुमक्खियों को चादर और गमछे से भगाया और तुरंत सभी को अस्पताल पहुंचाया, जहां घायलों का इलाज किया गया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के खंड चिकित्सा अधिकारी राम कुमार सोनी ने बताया कि सभी घायल छात्राओं का उपचार कर उन्हें घर भेज दिया गया था और समझाइस दी गई थी कि यदि घबराहट या चक्कर जैसी स्थिति लगे तो तत्काल मुझसे संपर्क करें।

परिजनों तथा नगरवासियों का कहना है कि उक्त घटना की जांच की जानी चाहिए और स्कूल संचालक पर लापरवाही को लेकर कार्यवाही की जानी चाहिए। स्कूल संचालक को नोटिस जारी किया जाना चाहिए और उन्हें घटना के संबंध में स्पष्टीकरण देने के लिए कहा जाना चाहिए। और बच्चो को आई चोटो को लेकर नुकसान की भरपाई करनी चाहिए। जांच के दौरान स्कूल संचालक की लापरवाही सामने आती है तो उनका लाइसेंस रद्द किया जाना चाहिए। विभागीय अधिकारी ने बताया कि उक्त मामले की जांच कर नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

डेनेशिया डेंटल हॉस्पिटल में सुंदरकांड का हुआ भव्य आयोजन

समय जगत, भोपाल। डॉ प्रशांत त्रिपाठी के डेनेशिया सुपरस्पेशलिटी डेंटल हॉस्पिटल में भव्य सुंदरकांड का आयोजन एक बहुत ही सफल और आध्यात्मिक अनुभव था। इस सुन्दरकाण्ड में अभिनव मानस मंडल द्वारा भजन और कीर्तन किया गया । सुंदरकांड का पाठ बहुत ही भावपूर्ण और आध्यात्मिक तरीके से किया गया। आयोजन में डेनेशिया डेंटल हॉस्पिटल के मरीज, कर्मचारी और स्थानीय लोगों ने भाग लिया। आयोजन के दौरान भजन और कीर्तन के साथ-साथ प्रसाद वितरण भी किया गया। आयोजन का माहौल बहुत ही शांत और आध्यात्मिक था। आयोजन के दौरान सभी लोगों ने बहुत ही ध्यान और श्रद्धा से सुंदरकांड का पाठ सुना और सभी लोगों ने बहुत ही सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। इस सुंदरकांड का आयोजन पीके त्रिपाठी , श्रीमती विजयलक्ष्मी त्रिपाठी ,डॉ. प्रशांत त्रिपाठी और डॉ. पूजा त्रिपाठी द्वारा किया गया। सुन्दरकाण्ड में अभिनव मानस मंडल के मंडल पदाधिकारीगण चंद्रमोहन साहू, देवेंद्र सक्सेना, पंडित राधेश्याम तिवारी, एम. एल. राय, एनपी आर्या, चंद्रप्रकाश मालवीय, मनोज खंडेलवाल , उमेश सिंह , वाय पी त्रिपाठी , प्रकाश राय सक्सेना , आर. एस. यादव , एस. आर. डहेरिया, दीपक सोनी , अरविन्द , लक्ष्मण सिंह मीणा , जय प्रकाश, संजय, कैलाश श्री राव भी उपस्थित थे।

सार-समाचार

नगर में गणगौर महोत्सव की शुरुआत में माता की खुली बाड़ी

समय जगत, बिस्टान। नगर में सोमवार को गणगौर महाउत्सव की शुरुआत में माता की बाड़ी खुली । दो स्थानों पर अलग अलग माता बाड़ी में बड़ी संख्या में माता रूपी ज्वारों का श्रद्धालुओं ने विधिपूर्वक पूजन किया एवं माता को श्रद्धा से घर ले गए । पवित्रता के साथ घर में जोड़े जिमाये । रात्रि में माता का जागरण किया जा कर झालरियो के माध्यम से आराधना की जाएगी । पंडित बसन्त दुबे ,नरेन्द्र त्रिवेदी ने बताया कि करीब 200 से अधिक माता रथ गाँव के श्रद्धालु डोल ताशे व भजन गाते उत्साह से घर ले गए।

ईदगाह में मुस्लिम समाज ने अदा की ईद कि नमाज़

बिस्टान। नगर परिषद क्षेत्र में मुस्लिम समाज द्वारा ईद के मौके पर ईदगाह पर ईद की नमाज़ अदा की गई और नमाज के बाद देश की तरक्की, शांति भाईचारे के लिए दुआ मांगी गई। बिस्टान शहर जामा मस्जिद के इमाम ने नमाज पढ़ाई। जिसमें बिस्टान अनकवाड़ी गोपालपुरा घट्टी के लोगों ने एक साथ नमाज अदा कर एक दूसरे के गले लगकर मुबारकबाद दी।

होमगार्ड सेवाराम मरावी का सेवा के दौरान सड़क दुर्घटना में निधन

समय जगत नरसिंहपुर। जिला मुख्यालय नरसिंहपुर में होमगार्ड में पदस्थ सैनिक सेवाराम मरावी का विगत रात्रि में सेवा के दौरान सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। सेवाराम मरावी जिला नरसिंहपुर के ग्राम आलोद के रहने वाले थे, मरावी की होमगार्ड में नियुक्ति दिनांक 01.11.1990 को जिला नरसिंहपुर में हुयी थी। सैनिक मरावी अपने सेवाकाल के दौरान विभिन्न थानों में पदस्थ रहकर कानून व्यवस्था से जुड़ी ड्यूटी में अपना योगदान देते रहे हैं। होमगार्ड कार्यालय नरसिंहपुर में पुलिस अधीक्षक मृगाखी डेका, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संदीप भूरिया, सेनानी होमगार्ड टीआर चौहान, रक्षित निरीक्षक मनोरमा बघेल, थाना प्रभारी मुंगवानी संजय सूर्यवंषी, पीसी वीरेन्द्र सूर्यवंषी एवं अन्य स्टाफ के द्वारा सैनिक सेवाराम मरावी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

ग्राम पंचायत मोहगांव में जल गंगा संवर्धन अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ

समय जगत, मंडला। निवास -जिले के जनपद पंचायत निवास अंतर्गत 30 मार्च 2025 को ग्राम पंचायत मोहगांव के पोषक ग्राम बंदरिया भटगांव में जल गंगा संवर्धन अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मध्यप्रदेश सरकार की पहल पर इस अभियान का शुभारंभ किया गया, जो 30 मार्च से 30 जून तक पूरे राज्य में जल स्त्रोतों के संरक्षण और पुण्य जीवन के उद्देश्य से चलेगा। कार्यक्रम के दौरान ग्राम भटगांव स्थित गौर नदी के उदगम स्थल पर एसडीओ मरकाम की उपस्थिति में प्रसिद्ध हनुमान मंदिर बंदरिया भटगांव में साफ़-सफाई की गई और जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं सौंदर्यीकरण के विषय पर चर्चा की गई। इस अवसर पर स्थानीय सरपंच श्रीमती सुनीता बाई, सचिव रामेश कुशराम, रोजगार सहायक गोविंद वरकड़े सहित ग्राम पंच और ग्रामीणों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के अंत में सुंदर काण्ड का पाठ एवं गायन आरती का आयोजन किया गया, जो जल संरक्षण की दिशा में सामूहिक प्रयासों को प्रेरित करने वाला था। इस अभियान के माध्यम से जल संकट से निपटने के लिए स्थानीय समुदाय को जागरूक किया जाएगा और जल स्त्रोतों के संरक्षण की दिशा में सक्रिय कदम उठाए जाएंगे। जल गंगा संवर्धन अभियान, मध्यप्रदेश सरकार की जल संरक्षण में महती भूमिका को दर्शाता है, जो पूरे राज्य में एकजुट होकर जल स्त्रोतों की रक्षा करने का संकल्प लेता है।

पीएम श्री विद्यालय सिंगारपुर में हुआ वार्षिकोत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

समय जगत, मंडला। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार तथा लोक शिक्षण संचालनालय भोपाल के आदेशानुसार पी एम श्री एकीकृत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिंगारपुर में विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य जय बैरागी के मार्गदर्शन एवं अशोक वरकड़े के नेतृत्व में वार्षिक उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के समस्त शैक्षणिक स्टॉफ की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ । वार्षिक उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रभारी प्राचार्य जय बैरागी तथा विशिष्ट अतिथियों के द्वारा मां भारती भारत माता , वीणा वादनी, ज्ञान की देवी मां सरस्वती की तस्वीर में दीप प्रज्ज्वलन व माल्यार्पण कर किया गया । वार्षिकोत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यालय के सभी छात्र छात्राओं ने बड़े ही हर्ष और उत्साह के साथ बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिए। कार्यक्रम में छात्र छात्राओं के द्वारा देशभक्ति गीत , क्षेत्रीय गीत और आदिवासी संस्कृति पर आधारित लोकनृत्य में एकल , युगल तथा सामूहिक नृत्य पर अपनी मनमोहक नृत्य

प्रस्तुत कर संध्या सांस्कृतिक कार्यक्रम को चार चांद लगा दिए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रभारी प्राचार्य के द्वारा प्रमाण पत्र वितरण किया गया । तत्पश्चात उपस्थित समस्त शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य जय बैरागी ने संबोधित किए उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि वार्षिक उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन शासन के आदेशानुसार शैक्षणिक कार्यो के साथ साथ छात्र छात्राओं में सर्वांगीण विकास करने और व्यक्तित्व विकास करने के लिए वार्षिक उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। वार्षिक उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में शैक्षणिक स्टॉफ में महेश सरोते , आसिफ खान , हेमंत वरकड़े, गणेश परते , अशोक धुर्वे , मनोज कुडापे, देवेंद्र मार्को , मुरली पटेल , लवकेश कुमेश्वर, श्रीमती नीतू श्रीवास, चंद्र सिंह मसराम, सुश्री प्रियंका तेकाम, सुश्री पूजा बर्मन, श्रीमती अल्का जैन, श्रीमती सुलेखा चक्रवर्ती, श्री भाग सिंह उर्वे, श्रीमती सुनीता झारिया, विवेक सिंगोर, सुश्री श्रुति चौबे, श्रीमती वैशाली बोरकर, सुश्री सिया रहंगडाले, श्रीमती सरोज मिश्रा , आनंद यादव और समाजसेवी हीरा सिंह उइके तथा विद्यालय के पी टी आई और कार्यक्रम प्रभारी अशोक वरकड़े उपस्थित रहे ।

हिन्दू नववर्ष पर मझौली जनपद में आयोजित हुआ कार्यक्रम

कार्यक्रम में हावी रही अव्यवस्था, जनहित के मुद्दों पर सार्थक जवाब नहीं दे पाये सांसद

रवि शुक्ला- समय जगत, मझौली। जिले के जनपद मुख्यालय मझौली में रविवार को कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। जहां सांसद राजेश मिश्रा मुख्य अतिथि रहे जबकि क्षेत्रीय विधायक कुंवर सिंह टेकाम ने अध्यक्षता की। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं जनपद अध्यक्ष सुनैना सिंह के स्वागत भाषण से हुई। साथ ही अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। अपने संबोधन में विधायक कुंवर सिंह टेकाम ने हिंदू नव वर्ष की सभी को शुभकामना दी। आगे कहा कि मझौली के लिए सौगात के रूप में 50 विस्तरीय सिविल अस्पताल स्वीकृत की गई है जिसके निर्माण से क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा बेहतर रहेगा। वहीं मझौली में बाईपास सड़क निर्माण का कार्य पूर्ण करने एवं जनपद मुख्यालय में बाउंड्री का निर्माण को पूर्ण करने के लिए जोर देते हुए उपखंड अधिकारी को मामले का निराकरण करने को कहा वहीं सांसद से जनपद मझौली में बैठक हाल के लिए,उप पंजीयक कार्यालय संचालित करने,बंद पड़ी सिंचाई परियोजना जिसमें सेहरा एनिकट,जमधर एनिकट एवं अन्य को चालू करने,एन एच कटनी सिंगरौली रोड को बाया मझौली होकर निर्माण करने एवं 4 वर्षों से बंद कटनी चोपन पैसेंजर गाड़ियों को अविलंब संचालित किए जाने की मांग की गई। सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा ने अपने संबोधन में जहां उपस्थित जन

समुदाय एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय विधायक की सराहना की और कहा कि मेरा प्रयास होगा विकास के मामले में धौहनी विधानसभा प्रदेश स्तर में पहले पायदान पर रहे।वहीं विधायक द्वारा की गई मांगों को पूरा करने के लिए आश्वासन दिया गया। आयोजित कार्यक्रम में जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत डांगा के लामी पाटी में नवीन तालाबों के निर्माण का भूमि पूजन किया गया। वही दिव्यांग जनों को एलिमको कंपनी के द्वारा निर्मित सहायक उपकरण जिसमें बैटरी चालित ट्राई सिकिल प्रदान की गई एवं साधारण ट्राईसिकिल के साथ अन्य उपकरण प्रदान किए गए।विगत 6 मार्च को आयोजित मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में सामाजिक जन सहयोग से एकत्रित राशि से 149 नव विवाहिताओं को एक पंखा एक शुद्ध पेयजल के लिए कैम्पर एवं डिनर सेट के साथ 49 हजार रुपए के चेक सभी को प्रदान किए गए। सांसद ने क्षेत्रीय भाषा में उद्बोधन दिया वहीं दूसरी ओर जब मीडिया द्वारा जनहित के मुद्दों पर सवाल किया गया तो उनका गोल-मोल जवाब चर्चा का विषय बना रहा,मीडिया ने सवाल किया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मझौली में बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्था से लोग आए दिन परेशान रहते हैं जबकि जिम्मेदार नदारत रहते हैं इसमें कैसे सुधार होगा, तो उनके द्वारा डॉक्टर भर्ती प्रक्रिया की बात बताने लगे जबकि सीधा सवाल मझौली सीबीएमओ की लापरवाही पर था लेकिन सांसद एक भी शब्द नहीं बोले, दूसरा सवाल महाविद्यालय मझौली में एक दशक पूर्व से निरस्त परीक्षा केंद्र को पुनःस्वीकृत करने के लिए क्या प्रयास करेंगे जिसका जवाब कोर्ट में मामला होना बताया गया सीधी सांसद से मीडिया को कोई ठोस एवं सार्थक जबाव नहीं मिला। एक तरफ जहां कार्यक्रम को वृहद रूप देने के लिए कार्य योजना बनाई गई थी जिसके लिए बकायदा बजट भी जारी किया गया होगा लेकिन व्यवस्था की पोल उस समय खुल गई जब उपखंड अधिकारी एवं तहसीलदार को बैठने के लिए कुर्सी नहीं मिली और ना ही प्रथम पंक्ति में जगह मिली जिससे काफी देर तक वे परेशान नजर आए लोगों के कहने पर भले ही बाद में कुर्सी की व्यवस्था कर दी गई। लेकिन मझौली तहसीलदार को कार्यक्रम के अंत तक उचित स्थान नहीं मिला,लोगों ने यह भी बताया था कि उन्हें सुबह 11 बुलाया गया था जिससे इस उम्मीद के साथ आए थे कि नाश्ता वगैरह उपलब्ध कराया जाएगा लेकिन उन्हें मायूसी ही हाथ लगी।

ईदगाह में उमड़ी नमाजियों की भीड़, शहर काजी ने पढ़ाई नमाज

शादी में दहेज की नुमाइश बंद करने और चालीसवें में गरीबों, जरूरतमंदों को खाना खिलाने की अपील

महोबा। जनपद में सोमवार को ईद-उल-फित्तर का पावन पर्व हर्ष, उल्लास और अकीदत के साथ मनाया गया। एक माह तक रमजान के रोजे रखने के बाद मुस्लिम समाज के लोगों ने ईद की नमाज अदा कर अल्लाह का शुक्रिया अदा किया और मुल्क की सलामती, खुशहाली, अमन और शांति के लिए दुआ मांगी। शहर के बजरिया स्थित पहाड़ पर बनी ऐतिहासिक ईदगाह में हजारों की संख्या में मुसलमान नमाज अदा करने पहुंचे। शहर काजी आफाक हुसैन ने निर्धारित समय सुबह 8 बजे ईद की नमाज पढ़ाई इसके बाद खुत्बा दिया और सभी को ईद की मुबारकबाद दी। उन्होंने लोगों से इस्लाम के पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के बताए रास्ते पर चलने की अपील की। काजी आफाक हुसैन ने अपने संबोधन में समाज में बढ़ती कुरीतियों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने शादी में दहेज की नुमाइश बंद करने और चालीसवे के खाने में गरीबों, यतीमों और जरूरतमंदों को शामिल करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि शादी में दहेज सजाने की प्रथा को खत्म किया जाए, क्योंकि इससे गरीब परिवारों को मलाल होता है। ईदगाह में 2 रकात नमाज अदा करने के बाद मुसलमानों ने अल्लाह से देश में अमन, प्रेम और शांति की दुआ मांगी। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। ईदगाह के पास राजनीतिक दलों और समाजसेवियों ने स्टॉल लगाकर मुसलमानों का मुंह मीठा कराया और ईद की शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर जिला प्रशासन भी ईदगाह में मौजूद रहा। डीएम मृदुल चौधरी, एसपी पलाश बंसल, एएसपी वंदना सिंह और सीओ दीपक दुबे ने भी लोगों को ईद की मुबारकबाद दी। वहीं संयुक्त मीडिया क्लब के संरक्षक अमित श्रोतीय, जिलाध्यक्ष भगवानदीन यादव, प्रेस क्लब ऑफ यूपी के अध्यक्ष रमाकांत मिश्रा, बुंदेलखंड प्रभारी इरफान पठान ने ईदगाह में मुसलमानों को ईद की मुबारकबाद दी। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए जगह-जगह भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। ईदगाह के अलावा शहर की शाही जामा मस्जिद, किला मस्जिद और अन्य मस्जिदों में भी ईद की नमाज अदा की गई। नमाज के बाद लोगों ने देश में अमन-चैन की दुआ की और एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। ईदगाह में नमाज अदा करने के बाद लोग अपने-अपने घरों को लौटे और एक-दूसरे के घर जाकर मुबारकबाद देने का सिलसिला शुरू हुआ। घर-घर में सिवईयां, खीर और तरह-तरह के पकवान बनाए गए, जिनका लोगों ने मिलकर लुत्फउठाया। बच्चों में ईद को लेकर खासा उत्साह दिखाई दिया। नए कपड़ों में सजे-धजे बच्चे एक-दूसरे को ईद की मुबारकबाद देते और मिठाइयां बांटते नजर आए। एक माह तक रमजान के रोजे रखने के बाद ईद का पर्व मुसलमानों के लिए सुकून और इत्मिनान का रहा, नमाज के बाद हर चेहरा खुशी से झूमता नजर आया। ईद के मौके पर आपसी भाईचारे और मेलजोल को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया।

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होहि सुखारे

(नवरात्रि पर्व पर विशेष)
डॉ. एलसी अनुरागी

महोबा। भारतीय संस्कृति मे नवरात्रि पर्व का विशेष महत्व है। नवरात्र मे मॉ पार्वती के नौ रूपों की आराधना की जाती है। ये नौ रूप इस प्रकार है। शैलपुत्री, ब्रम्हचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री। दुर्गासप्तशती मे देवी के 108 नाम बताये गए है। जिसमे पहला नाम ऊँ सती है और एक सौ आठवॉ नाम ब्रम्हावादिनी है। नवदुर्गा पर्व मे सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती मे दिए गए तेरह अध्याय के पाठ पढ़ने का विधान है। यदि मनुष्य इतना न कर सके तो उसे सप्तश्लोकी सात श्लोक दुर्गा पाठ अवश्य करना चाहिए। आज की भौतिकता की भागदौड़ मे यदि मनुष्य इतना भी न कर सके तो कम से कम दुर्गा सप्तशती के एक श्लोक का वाचन 108 बार करना चाहिए जिससे सभी मंगलकामनाएँ पूर्ण होती है। वह श्लोक इस प्रकार है- सर्व मंगलमगल्ये शिवे सर्वार्थसाधि के शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोअस्तु ते। मॉ की आराधना करने से धर्म, अर्थ काम व मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। सीताा जी ने श्रीराम को पति रूप मे प्राप्त करने के लिए पार्वती देवी की आराधना की थी। सीता जी ने इस प्रकार प्रार्थना की, पर्वतों के राजा हिमांचल की पुत्री पार्वती, शिवजी के मुखरूपी चन्द्रमा की चकोरी, हाथी के मुखवाले गणेश जी और छः मुख वाले स्वामी कार्तिक जी की माता बिजली जैसी कांतियुक्त शरीर वाली माता आपकी जय हो। आपका न आदि है- न मध्य है और न अन्त है। आपके असीम प्रभाव को वेद भी नही जानते। आप संसार को उत्पन्न पालन और नाश करने वाली है। विश्व को मोहित करने वाली और स्वतंत्र रूप से बिहार करने वाली है। आप समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। आपकी पूजा अर्चना करने से देव, दानव मनुष्य सभी सुखी रहते है। संत तुलसीदास ने रामचरित मानस के बालकाण्ड के दोहा 235 की चौपाई संख्या पॉच व छः मे लिखा- जय जय गिरिबरराज किसोरी, जय महेस मुखचन्द्र चकोरी।

सार-समाचार

बड़ी माता मंदिर में भक्तों की उमड़ रही भीड़

पनवाड़ी/महोबा। नगर के प्रसिद्ध प्राचीन बड़ी माता मंदिर में चैत्र नवरात्रि का महोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया जा रहा है। सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक माता रानी का भव्य श्रृंगार एवं महाआरती होती है जिसमें नगर के सैकड़ो भक्त माता रानी के जयकारे लगाते हुए मंदिर में आते हैं। नगर में अपने आप में बहुत ही सुंदर और भव्य मंदिर जिसको नया स्वरूप प्रदान करने में बड़ी माता मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश मिश्रा व उनकी संपूर्ण समिति द्वारा अथक प्रयास किया गया। पंडित सुरेश चंद तिवारी के द्वारा मंदिर में पूजा पाठ का कार्य संपन्न कराया जाता है लोगों को माता रानी के दर्शन करने से ऐसा कहा गया है कि जो भी भक्त मां के मंदिर में अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं मां उन्हें अवश्य पूर्ण करती हैं।

सोहागपुर विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर बिछाया जा रहा है सड़कों का जाल: विजयपाल सिंह

सोहागपुर। विधायक श्री विजयपाल सिंह राजपूत के अथक प्रयासों से सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र में सड़कों का जाल बिछाकर आमजन के जीवन में समृद्धि लाने और उनकी यात्राओं सुगम-सुरक्षित करने के लिए संकल्पित हैं। विधायक श्री विजयपाल सिंह राजपूत ने बताया कि लोक निर्माण विभाग की वित्तीय व्यय समिति की 108वी बैठक में सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र में सड़क निर्माण कार्य की प्रशासकीय स्वीकृति जारी हुई है जिसमें सोहागपुर से निभोरा, पंचवटी रैनीपानी, पाठई, उड़दन मगरिया घोघरी से कामठी-घोघरी से सारंगपुर मार्ग की लंबाई 24.30 किलोमीटर है जिसकी लागत 3314.91 लाख है। इसी प्रकार बाबई नसीराबाद मार्ग में बाकुड़ नदी पर जलमग्नीय सेतु का निर्माण की लंबाई 13/2 कि.मी. है जिसकी लागत 606.82 लाख है, सूकरी से मनकवाडा की लंबाई 1.00 कि.मी. है जिसकी लागत 300.05 है।

खातेगांव में 11 अप्रैल को मनाई जाएगी ज्योतिबा फुले जयंती

राकेश अजमेरा- समय जगत, , खातेगाँव। खातेगांव के सामुदायिक भवन में संयुक्त माली समाज के द्वारा बैठक रखी। जिसमें खातेगांव विधानसभा के संयुक्त माली समाजजनों ने जानकारी देते हुए बताया कि ग्यारह अप्रैल को माली समाज के समाज प्रवर्तक अग्रदूत सत्यशोधक समाज के राष्ट्रपिता महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती नगर खातेगांव इंद्रप्रस्थ गार्डन में मनाई जाएगी। इस अवसर पर संयुक्त माली समाज द्वारा विशाल चल समारोह एवं स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। शाम 6 बजे से स्नेह भोज का आयोजन किया जाएगा, कार्यक्रम में सभी समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थी जिन्होंने वर्ष 2023-24 शिक्षण संस्थान में कक्षा दसवीं ओर बारहवीं में सत्तर प्रतिशत या उससे अधिक अंक लाए हैं, उन परिजनों से निवेदन किया कि 8 अप्रैल 2025 तक होंडा शोरूम नेमावर रोड कार्यालय पहुंचकर अपनी अंकसूची जमा कराये।

स्वच्छता के लिए सरकार कर रही है प्रयास, साथ ही लोगों का जागरुक होना है आवश्यक : राज्यमंत्री

दमोह। संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग, राज्यमंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी ने ओंकारेश्वर स्थित गौमुख घाट पर सफाई अभियान का शुभारंभ किया। इसके बाद उन्होंने माँ नर्मदा का विधिविधान से पूजन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि स्वच्छता के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है लेकिन लोगों का स्वच्छता के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है। जागरूकता ही बदलाव की सीढ़ी है। हर व्यक्ति का छोटा सा प्रयास स्वच्छता के क्षेत्र में बड़ा बदलाव ला सकता है। उन्होंने कहा कि ओंकारेश्वर में साफ सफाई रखने के लिए अभियान संचालित किया जाएगा। साथ ही लोगों को गंदगी ना करने के लिए प्रेरित भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जल गंगा संवर्धन अभियान 30 मार्च से 30 जून तक आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य जन भागीदारी से जल संरक्षण करना है और साथ ही जल संवर्धन के कार्य भी किए जाएँगे। इस अभियान के तहत ओंकारेश्वर में भी कार्य किए जाएँगे। राज्यमंत्री लोधी ने कहा ओंकारेश्वर में स्वच्छता को लेकर जो भी कमियां पाई गई हैं उन्हें योजना बनाकर दूर किया जायेगा। इसके अलावा राज्यमंत्री लोधी ने ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग महादेव एवं ममलेश्वर महादेव के दर्शन कर जलाभिषेक किया। उन्होंने बाबा ओंकारेश्वर से प्रदेश की समृद्धि, विकास और कल्याण की प्रार्थना की। वे पैदल पुल से ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने पहुंचे।

बलखंडन माता के दरबार में विराजेंगी महाकाली

समय जगत, नोहटा। ग्राम नोहटा में चैत्र की नवदुर्गा में समस्त ग्रामवासियों द्वारा निर्णय लिया गया कि इस बार माता महाकाली की स्थापना बलखंडन माता के प्रांगण में 9 दिनों तक महाआरती का आयोजन लगातार किया जाए। सभी आयोजन पंडित घनश्याम प्रसाद के मार्गदर्शन में किया जाएगा। समस्त क्षेत्र की जनता से अनुरोध है कि पधार कर धार्मिक लाभ उठाएं।

बोहरा समाजजनों उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया ईद का पर्व

समय जगत, बुरहानपुर। बोहरा समाज की ओर ईद का पर्व बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया सभी ने ईद की नमाज अदा की और देश दुनिया में सुख शांति और चैनों अमन की दुआ की इस मौके पर बुरहानपुर के पूर्व विधायक ठाकुर सुरेंद्रसिंह और कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षित ठाकुर हवेली पहुंचे उन्होंने हवेली पर आमिल शेख हैदर भाई साहब जमाली और शेख यूसुफ भाई जमाली से मुलाकात कर उनको बधाई दी जिसके बाद दरगाह मैनेजर और मुस्तफा भाई और सेफी अली भाई के घर पहुंचे और शब्बीर वकील साहब के परिवार में मुलाकात की जिस के बाद अली अजगर भाई के यहां पर पहुंच कर ईद की मुबारकबाद दी इस मौके पर नोमान पार्षद सोनू पहलवान इतिमाम बक्श मौजूद थे।गौरतलब है कि बुरहानपुर जिले में ईद का पर्व बोहरा समाज की ओर से बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। पूरे रमजान के महीने रोजदार रोजे रखकर इबादत करते हैं और ईद होती है उस दिन नमाज पढ़ने के बाद सभी एक दूसरे को गले मिलकर बधाई देते हैं। इस मौके पर बुरहानपुर के पूर्व विधायक ठाकुर सुरेंद्र सिंह और कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष हर्षित ठाकुर भी बोहरा समाज के बचपन के दोस्त अली अजगर के यहां पर पहुंचे और उनके परिवार को ईद पर्व की बधाई दी और उनके साथ खीर खुरमा भी खाया और घर परिवार के लोगों को बधाई दी।

हाथों में तख्तियां लेकर महिलाओं ने किया हंगामा

कस्बे से शराब दुकान हटाने को लेकर महिलाएं लामबंद

समय जगत, हमीरपुर। कस्बे के सीएचसी के पास खुल रहे देशी शराब के नए ठेके को हटाने की मांग को लेकर महिलाएं लामबंद हो गई है। हाथों में तख्तियां लेकर महिलाओ ने तहसील परिसर में तहसीलदार को ज्ञापन सौंपकर जोरदार हंगामा किया। तहसीलदार राममोहन कुशवाहा ने महिलाओं को आश्वासन दिया कि ठेके को अन्य किसी स्थान पर स्थानांतरित करा दिया जाएगा। तब जाकर महिलाएं मानी। उनका स्पष्ट कहना था कि ठेके को किसी भी हाल में यहां खुलने नहीं दिया जाए। सोमवार को कस्बे के हटवारा मोहल्ला में खुल रहे नए ठेके के विरोध में मोहल्ले की दो दर्जन से अधिक महिलाएं तख्तियां लेकर प्रदर्शन करते हुए तहसील में पहुंच गई और जमकर नारेबाजी की। कहा कि बस्ती में ठेके को लेकर पूर्व में भी शिकायत की जा चुकी है, लेकिन उसके बाद भी बस्ती में ठेका खोला जा रहा है। जबकि पास में मंदिर, बैंक व सीएचसी अस्पताल है। जहां महिलाओं का आना जाना लगा रहता है। महिलाओं का कहना है की ठेका खुलने से बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। दिन रात शराबियों और असमाजिक तत्वों का यहां जमघट लगा रहेगा, इससे परेशानी का सामना करना पड़ेगा। महिलाओं ने स्पष्ट कहा की किसी भी हाल में ठेके को खुलने नहीं दिया जाएगा। महिलाओं द्वारा धरना दिए जाने की सूचना पर तहसीलदार राममोहन कुशवाहा ने महिलाओं को समझाया। महिलाओं ने कहा कि कुछ भी हो जाए ठेका नहीं खुलने दिया जाएगा। तहसीलदार ने आश्वासन दिया कि मंदिर व अस्पताल के पास से ठेके को अन्य स्थानों पर स्थानातंरित करा दिया जाएगा। इसको लेकर संबंधित अधिकारियों से वार्ता हो गई है। मोहल्लेवासियों ने तहसीलदार को ज्ञापन भी सौंपा। करीब एक से दो घंटे बाद महिलाओं का प्रर्दशन समाप्त हुआ। ज्ञापन देने में सुनीता रमा चंद्रावती रामदेवी सविता संगीता नीलम यादव पार्वती महिलाएं मौजूद रही।

बता दें कि देशी ठेका सराब दुकान नंबर 1 पहले स्टेट बैंक के पास चल रहा था जिसे पिछले दिनों महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन कर हटा दिया। वही आबकारी विभाग ने इसे हटवारा मुहल्ले में शिफ्ट कर दिया बीती रात्रि दुकान बनाई जा रही जिसकी सूचना लगते ही सुबह महिलाएं विरोध प्रदर्शन में उतर आई।

कड़ी सुरक्षा में अदा की गई ईद की नमाज

बांदा। मुस्लिम समुदाय ने पैगंबर मुहम्मद साहब के जन्मदिन के अवसर पर ईद मिलाद-उन-नबी का त्योहार मनाया। इस अवसर पर मस्जिदों में विशेष नमाज़ अदा की गई और पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं को याद किया गया। ईद की नमाज को सुकशल संपन्न कराने के लिए डीएम, एसपी, एएसपी, एडीएम, सिटी मजिस्ट्रेट, शहर कोतवाल सहित अन्य थानों का फोर्स तैनात रहा। राजनेताओं में बसपा जिलाध्यक्ष रामसेवक प्रजापति, सुल्तान भाई, कांग्रेस अध्यक्ष राजेश दीक्षित, सपा के मधुसूदन कुशवाहा, ओमनारायण त्रिपाठी विदित, प्रमोद गुप्ता, उमेश यादव ने भी नमाजियों को ईद की मुबारकबाद दी। इस अवसर पर लोगों ने अपने घरों को सजाया और अपने प्रियजनों को शुभकामनाएं दीं। मस्जिदों में विशेष समारोह आयोजित किए गए, जिसमें पैगंबर मुहम्मद साहब की जीवनी और उनकी शिक्षाओं पर चर्चा की गई। ईद मिलाद-उन-नबी का त्योहार पैगंबर मुहम्मद के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है, जो इस्लामी कैलेंडर के तीसरे महीने रबी अल-अव्वल में पड़ता है। यह त्योहार मुस्लिम समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं और उनके जीवन को याद करने का अवसर प्रदान करता है। इस अवसर पर लोगों ने पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं को याद किया और उनके जीवन को अपनाने का संकल्प लिया। मस्जिदों में विशेष नमाज़ अदा की गई और पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं को फैलाने के लिए काम किया गया। त्योहार के अवसर पर लोगों ने अपने प्रियजनों को शुभकामनाएं दीं और पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने का संकल्प लिया। यह त्योहार मुस्लिम समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं और उनके जीवन को याद करने का अवसर प्रदान करता है। जनपद में ईद-उल-फितर पर्व को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु व्यापक पुलिस प्रबंध किए गए थे। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने शहर क्षेत्र में भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पुलिस अधिकारी व जिलाधिकारी ने लोगों से बातचीत कर त्यौहार को सौहार्दपूर्ण तरीके से मनाने की अपील करते रहे। लोगों को ईद-उल-फितर पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं दी । पुलिस अधिकारी ने बताया कि पर्व को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु सुरक्षा के पुख्ता इंतेजाम किए गए हैं। साथ ही ड्रोन कैमरों से निगरानी भी की जा रही है। सोशल मीडिया पर अफवाहों एवं भ्रामक खबरों पर सतत् निगरानी की जा रही है।

जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ

देवकरण झांजा, गुलाना। मध्यप्रदेश शासन से प्राप्त निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान का आज 30 मार्च से 30 जून 2025 तक 90 दिवसीय अभियान का शुभारंभ किया गया है। जिला स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ ग्राम पंचायत बेरछी में चिल्हर नदी के उदगम क्षेत्र में पूजन कर नदी के उदगम क्षेत्र में विकास कार्य जनसहयोग से प्रारंभ कर किया गया। जिसमें विधानसभा शाजापुर विधायक श्री अरुण भीमावद एवं जिला पंचायत शाजापुर मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री संतोष टैगोर एवं अन्य जनप्रतिनिधियों एवं जनसमुदाय की उपस्थिति में श्रम दान कर प्रारंभ किया। विधायक श्री भीमावद ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जल संवर्धन जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले के पुराने कुएं, तालाब, बावड़ियों का जीर्णोद्धार किया जाएगा। उन्होंने ग्रामीणों से अनुरोध किया कि जल गंगा संवर्धन कार्य में वे अपनी सहभागिता देकर अपने आस -पास के कुएं, बावड़ी, तालाब आदि को पुनः जीवित करे। विधायक श्री भीमावद ने जानकारी देते हुए बताया कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा नर्मदा शिप्रा परियोजना एवं नर्मदा कालीसिंध परियोजना के माध्यम से पर्याप्त पानी मिलने लगेगा, जिससे किसान भाई तीन फसल ले सकेंगे व उनकी आय में वृद्धि होगी। उन्होंने नववर्ष एवं गुड़ी पड़वा की सभी को शुभकामनाएं भी दी। इसके पूर्व जिला पंचायत सीईओ श्री टैगोर ने 30 मार्च से 30 जून 2025 तक आयोजित होने वाले जल गंगा संर्वधन अभियान के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर व जनपद पंचायत सीईओ श्री राजकुमार हालदर, श्री राधेश्याम गुर्जर, श्री जुगल किशोर पाटीदार, श्री रमेश पाटीदार, सरपंच सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे। इसी तरह जनपद पंचायत कालापीपल में उक्त अभियान के दौरान ग्राम कनाड़िया में जोगखेड़ी मार्ग पर स्थित तालाब निर्माण कार्य में जन सहयोग/जनभागीदारी के माध्यम से तालाब गहरीकरण का कार्य किया गया।

स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक निभाई कार्यक्रम में सहभागिता, सामाजिक समरसता बढ़ाने पर दिया गया जोर

कालापीपल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का गुड़ी पड़वा कार्यक्रम आयोजित

कालापीपल। कालापीपल नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कालापीपल खण्ड आरएसएस द्वारा शारीरिक प्रधान कार्यक्रम का आयोजन हिंदू नव वर्ष गुड़ी पड़वा के अवसर पर सहारा पब्लिक हाई सेकंडरी स्कूल प्रांगण में किया गया,कार्यक्रम का उद्देश्य संघ कार्य के विस्तार और स्वयंसेवकों में अनुशासन,समरसता एवं शारीरिक दक्षता को बढ़ावा देना था,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक परम पूज्य डॉक्टर केशव राव बलिराम हेडगेवार जी की जयंती पर खंड के सभी स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश में आद्य सरसंघचालक प्रणाम किया, कार्यक्रम में खंड सरसंघचालक जे.पी शर्मा,महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 कल्याण दास जी महाराज एवं मुख्य वक्ता विभाग सह कार्यवाह विभाग सतीश शर्मा उपस्थित रहे।

स्वयंसेवकों का अनुशासन बद्ध प्रदर्शन: नगर के नागरिकों की उपस्थिति में स्वयंसेवकों ने दंड प्रयोग गण समता और सामूहिक समता का प्रभावी एवं अनुशासनबद्ध प्रदर्शन किया।इस दौरान स्वयंसेवकों ने विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का प्रदर्शन कर अपनी क्षमता और अनुशासन का परिचय दिया जिससे नगरवासियों में संघ कार्य के प्रति जागरूकता और प्रेरणा का संचार हुआ।

संघ की स्थापना और उद्देश्य पर विस्तृत चर्चा: मुख्य वक्ता सतीश शर्मा ने हिंदू नव वर्ष के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसी दिन डॉक्टर हेडगेवार जी का जन्म दिवस भी होता है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना,उसके उद्देश्य और इसके ऐतिहासिक विकास पर भी चचर्चा की,उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय देते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आरएसएस की स्थापना 27 सितंबर 1925 को विजयादशमी के दिन नागपुर में डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी।इसकी स्थापना का उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना,राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना और भारत को एक शक्तिशाली एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विकसित करना था,डॉ.हेडगेवार एक प्रखर राष्ट्रभक्त थे और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था।वे यह अनुभव कर चुके थे कि हिंदू समाज विभिन्न जातियों,वर्गों और संप्रदायों में बंटा हुआ है, जिससे उसकी शक्ति कमजोर हो रही है,उन्होंने महसूस किया कि यदि समाज संगठित नहीं हुआ तो यह बाहरी आक्रमणों और आंतरिक विघटन के कारण कमजोर पड़ता जाएगा,इसी सोच के आधार पर उन्होंने एक ऐसे संगठन की नींव रखी,जो हिंदू समाज को संगठित कर राष्ट्र की सेवा में तत्पर कर सके,संघ की शाखा में मानव निर्माण होता है,हमें हिंदू जीवन शैली पर गर्व करना चाहिए और यह नव वर्ष संकल्प लेने का दिन है,उन्होंने संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि और उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि संघ समाज में एकता,राष्ट्रप्रेम और अनुशासन को मजबूत करने का कार्य कर रहा है,उन्होंने बताया कि संघ अपने समरस अभियान के तहत सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने हेतु गाँवों में एक श्मशान एक जलाशय और एक पूजा स्थल की अवधारणा को साकार कर रहा है,साथ ही पांच परिवर्तन पर भी सभी स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं,कार्यक्रम का संचालन मुख्य शिक्षक अरविंद मेवाड़ा ने किया।

समूचे जिले में शांति व भाईचारे के साथ मनाया गया ईदुल फितर का त्यौहार

विधायक राजेंद्र भारती, पूर्व विधायक घनश्याम सिंह, नगर पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि प्रशांत ढेंगुला सहित नेताओं ने दी मुबारकबाद

सतीश सिहारे- समय जगत, दतिया। 31 मार्च को समूचे जिले में ईदुलफितर का त्यौहार उल्लास के साथ मनाया गया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने ईदगाह पर नमाज अता कर अमन शांति की रव से दुआ मांगी। सोमवार को शहर काजी ने सुबह बड़ी ईदगाह मस्जिद पर एकत्रित हुए लोगों को ईद की विशेष नमाज अता करवाई। इसके बाद सभी लोगों ने ईदगाह से बाहर निकाल कर एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी।

ईदगाह पर पहुंचे नेतागण, गले लगाकर दी मुबारक : इस दौरान बड़ी संख्या में समाज के लोगों ने गले मिलकर एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी। दतिया विधायक राजेंद्र भारती और अवधेश नायक ईदगाह पहुंचे यहां उन्होंने मुस्लिम भाइयों से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं ने भी गले मिलकर ईद की बधाई दी। ईदगाह पर भाजपा नेता नगर पालिकध्यक्ष प्रतिनिधि प्रशांत ढेंगुला, उपाध्यक्ष प्रतिनिधि योगेश सक्सेना, कालीचरण कुशवाहा, पूर्व जिलाध्यक्ष विक्रम सिंह बुंदेला, पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष नाहर सिंह यादव आदि ने गले मिलकर ईदगाह पर मुबारकबाद दी। निर्धारित समय पर शहर के अन्य ईदगाहों शिया समुदाय के लोगों ने तरणताल मार्ग स्थित ईदगाह पर नमाज पढी। वहीं राजगढ़ चौराहा, तलैया मोहल्ला, साईनी मोहल्ला में ईद की नमाज करवाई गई।

वहीं सेंवढ़ा के पूर्व विधायक घनश्याम सिंह ने इंदरगढ़ पहुंच कर मुस्लिम समाज के लोगों से मुलाकात की तथा ईद की नमाज पढ़ कर बाहर निकल रहे लोगों से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। उन्होंने कहा कि ईद का पर्व समाज में भाई चारा की भावना को मजबूत करता है। इस अवसर पर हरिमोहन गुर्जर, कोक सिंह मयंक, अनार सिंह यादव, बीके जाटव आदि उपस्थित रहे। वहीं सेंवढ़ा में किला गेट स्थित कांग्रेस जनसंपर्क कार्यालय पर सेंवढ़ा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष जयवेंद्र सिंह परिहार ने मुस्लिम समुदाय के लोगों को शरबत पिलाकर ईद की मुबारकबाद दी।

सुरक्षा में तैनात रहा भारी पुलिस बल: इस अवसर पर ईदगाह व सभी मस्जिदों पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुनील कुमार शिवहरे के निर्देशन में एसडीओपी प्रियंका मिश्रा, कोतवाली टीआई धीरेंद्र मिश्रा व पुलिस बल सुरक्षा की दृष्टि से तैनात रहा। सुरक्षा को देखते हुए समूचे जिले में भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। पुलिस के अधिकारी पेट्रोलिंग करते हुए भी दिखाई दिए।

जर्जर सड़क बनवाने के लिए अब धरना- प्रदर्शन करेंगे ग्रामीण

बरुआ सड़क की दुर्दशा देख ग्रामीणों में बढ़ रहा आक्रोश

समय जगत, चित्रकूट। बीते 4 वर्ष से अधिक तीरमऊ बालू खदान से ओवर लोड बालू लेकर निकल रहे भारी वाहन से क्षतिग्रस्त हुई सड़क के पुनर्णिमान न किए जाने से आहत बरुआ, रुपौली, रगौली, तीरमऊ के ग्रामीण बीते 27 मार्च को जिलाधिकारी चित्रकूट को प्रार्थना पत्र देकर अविलम्ब सड़क निर्माण कराए जाने की मांग की थी साथ ही उक्त पत्र में जिला प्रशासन को आगाह भी किया था कि यदि कार्य शुरू नहीं हुआ तो 1 अप्रैल से शांति पूर्ण धरना प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होंगे। शनिवार को ग्राम पंचायत बरुआ, रुपौली, रगौली, तीरमऊ में मुनादी करा बरुआ के पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय के पास सभी ग्रामीणों को इकट्ठा कराया गया उपस्थित ग्रामीणों ने प्रशासन द्वारा इस सड़क की अनदेखी पर चिंता जताई गई भट्ठा मोड से बरुआ तक लगभग आठकिलोमीटर की क्षतिग्रस्त सड़क के पुनर्निर्माण शुरू न होने पर आपत्ति व्यक्त की गई उक्त बैठक में तीरमऊ, बरुआ,रुपौली, रगौली आदि के ग्रामीण भी उपस्थित रहे बैठक में ग्रामीण रिंकू शुक्ला, पंकज शुक्ला, ऐश्वर्य प्रताप सिंह, पूरन सिंह आदि ने ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बीते ग्यारह वर्ष से इस क्षतिग्रस्त सड़क के बनवाने की लगातार हम सब लोग माँग करते चले आ रहे हैं लेकिन कोई सुन नहीं रहा इसके लिए बीते लोकसभा चुनाव का बहिस्कार भी बरुआ में किया गया तब जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव ने एक करोड़ रूपये से इस सड़क मार्ग बनवाने का भरोसा देकर मतदान के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया था लेकिन चुनाव होने के लगभग एक वर्ष होने वाले हैं इस सड़क के बनवाने की बात लगता है भूल गए इसके बाद बीते 27 मार्च को जिलाधिकारी चित्रकूट महोदय को भी पत्र देकर इस सड़क के बनवाने के लिए अनुरोध कर चुके हैं साथ ही उक्त पत्र में आगाह भी किया था कि यदि सड़क निर्माण शुरू नहीं हुआ तो 1 अप्रैल से शांति पूर्ण धरना प्रदर्शन करेंगे।

परीक्षा में सफलता पाने वाले नौनिहालों का शील्ड देकर किया सम्मान

सिलवानी। कक्षा 5 तथा 8 के परीक्षा परिणाम घोषित होने के साथ ही स्कूली नौनिहालों के चेहरो पर चमक देखी जा रही है। नगर के दा संस्कार वैरी स्कूल का घोषित परीक्षा परिणाम शत प्रतिषत रहा। यहां पर कक्षा 5 में 65 तथा 8 में 54 छात्रों ने सफलता हासिल की। बेहतर परीक्षा परिणाम आने पर स्कूल संचालको ने एक संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित किया तथा अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को शील्ड प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावक तथा शिक्षक व स्कूल स्टाप मौजूद रहें। सभी बच्चो को उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी।

सिडेंटरी लाइफ स्टाइल छोड़ना ही है फैटी लिवर से बचने का एक मात्र उपाय: डॉ. हेमंत जैन

दतिया। हर माह के अंतिम रविवार को डॉ. हेमंत जैन द्वारा आयोजित किये जाने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श शिविर का आयोजन संपन्न हुआ। शिविर में 67 मरीजों ने लाभ उठाया जिसमें मरीजों को मुफ्त बीपी, शुगर व फाइब्रो स्कैन की जांच की गई और उचित मार्गदर्शन परामर्श देकर उपचार की सलाह दी गई। डॉ. जैन ने कहा कि वर्तमान में मधुमेह, हाई बीपी और फैटी लिवर के मरीजों की संख्या बढ रही है जो चिंताजनक है। इस अवसर पर मरीजों को दिन में कम से कम 7000 कदम पैदल चलने की सलाह दी गयी जिससे शरीर में जमा चर्बी को गलाया जा सके और मांसपेशियों में मजबूती आये। सेडेंटरी लाइफस्टाइल का मतलब है कि कोई व्यक्ति दिन भर में बहुत ही कम शारीरिक गतिविधि करता है और ज्यादातर समय बैठे बैठे गुजारता है। अगर मधुमेह, हाई बीपी, कोलेस्ट्रॉल और मोटापे से बचना है तो खुद को एक्टिव रखना पड़ेगा जिसका मतलब है कि कम से कम 1 घंटा शारीरिक परिश्रम किया जावे।

3 वर्षों से लगातार आयुष्मान में निःशुल्क

नेशनल हॉस्पिटल, रीवा

कैंसर सर्जरी एवं कीमोथेरेपी | पथरी का दूरबीन के द्वारा ऑपरेशन | प्रोस्टेट, हार्निया, हाइड्रोसील

पता-नेशनल हॉस्पिटल, समान तिराहा, न्यू बस स्टैण्ड, रीवा (म.प्र.)

Mob. : 91 7566831551, 18008890620, 8608600604

7 APRIL

स्कूल चलें अभियान मध्य प्रदेश

चलो पढ़ें - आगे बढ़ें

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

'स्कूल चलें हम' अभियान

राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2025

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

01 अप्रैल, 2025 | प्रात: 9:30 बजे

शासकीय नवीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अरेरा कॉलोनी (ओल्ड कैंपियन), भोपाल

सबकी पहुंच में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य

- नवीन तकनीक आधारित एजुकेशन पोर्टल 3.0 का लोकार्पण, इस पोर्टल के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया का सरलीकरण, अब तक 6 लाख 10 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया
- छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क पाठ्य-पुस्तकों का वितरण
- नवीन शिक्षा सत्र में 1 अप्रैल से पूर्व 10वीं एवं 12वीं कक्षाओं को छोड़कर समस्त कक्षाओं के परीक्षा परिणाम घोषित
- कक्षा-1 से 8वीं तक सभी शालाओं में बालसभा का आयोजन
- शालाओं में 'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम का संचालन
- विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने वाले खिलाड़ी, साहित्यकार, कलाकार एवं शासकीय अधिकारी बच्चों को सुनायेंगे पढ़ाई के महत्व की एवं प्रेरणादायी कहानियां
- शाला स्तर पर पालकों के साथ सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की गतिविधियों का आयोजन
- पालकों को शैक्षणिक स्टाफ द्वारा दी जाएगी स्कूल शिक्षा से जुड़ी सरकारी योजनाओं की जानकारी
- पिछले शैक्षणिक सत्र में जिन विद्यार्थियों की 85% से अधिक उपस्थिति रही है, उनके पालकों का होगा सम्मान

D-11219/24

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2025

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा एवरेस्ट प्रेस ई-49/8 औखला, इंडस्ट्रीयल-एरिया प्लॉट-2 प्रींटिंग प्रेस से मुद्रित एवं बी-125 सादतपुर कालोनी दिल्ली-110094 से प्रकाशित। RNI NO. DELHIN/2005/14553, **प्रधान संपादक:** अशोक त्रिपाठी * **संपादक** अनिल श्रीवास्तव * **समाचार संपादक** सौरभ वार्ष्णेय

दिल्ली कार्यालय : एस-557, हीरा कॉम्पलेक्स 203 द्वितीय तल मुख्य मार्ग शकरपुर दिल्ली- 01142173537, 9899589700, **भोपाल कार्यालय** - 9, रायल हाउस, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-1, भोपाल। **फोन :** 0755-4273868, 4203479 **फैक्स :** 4094417 **ई-मेल** dainiksamayjagat.delhi@gmail.com *(समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार)